हिन्दुस्तानी कहानियाँ

दूसरा भाग

Rs 2 - 00

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

हिन्दुस्तानी कहानियाँ

दूसरा भाग

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

प्रकाशक :
अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

पहली बार	११००	सन् १९४९ मार्च
दूसरी बार	२०००	सन् १९५१ अप्रैल
तीसरी बार	५०००	सन् १९५२ मअी
चौथी बार	५०००	सन् १९५३ जून

दाम चौदह आने

मुद्रक :
अ. ठा. नाणावटी
हिन्दुस्तानी छापघर, वर्धा

निवेदन

सभाकी ओरसे ली जानेवाली हिन्दुस्तानी तीसरी परीक्षाके लिये यह किताब तैयार की गयी है। फिर भी सभाकी दूसरी किताबोंकी तरह आम पढ़नेवालोंके लिये भी यह दिलचस्प और अुपयोगी साबित हो, अिसका भी पूरा ख़याल रखा गया है।

हमें अुशी है कि गुजरातमें जो हिन्दुस्तानीका प्रचार हो रहा है, अुसमें यह किताब मददगार साबित हुअी है और अिस लिये यह चौथी बार छपी है। अुम्मीद है दूसरे प्रान्तोंमें भी यह अुपयोगी होगी।

अिन कहानियोंके भाव अूँचे और दिलके भीतर पहुँच जानेवाले हैं। भाषा साफ़, भावानुकूल और स्वाभाविक है। न विचारोंमें, न भाषामें आडंबर है। यही वजह है कि यह कहानियाँ दिलके तारोंको हिला देती है।

कहानियाँ छापनेकी अिजाज़त देनेके लिये सभाकी ओरसे लेखकोंको धन्यवाद देता हूँ।

अमृतलाल नाणावटी

काहानियोंका क्रम

कहानी	लेअक	पन्ना
१ गंगा-लाभ	गंगाप्रसाद मिश्र	१
२ ग़रीबोंका स्वर्ग	श्रीनाथसिंह	१९
३ कष्टका प्रतिदान	सियारामशरण गुप्त	३५
४ मिलाप	भाअी अलीअब्बास हुसैन	४६
५ आगोराकी प्रदर्शिनीमें	चन्द्रवती अृषभसेन जैन	६०
६ मनकी माया	रसूल अहमद 'अबोध'	६८
७ अुसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	८०
८ कठिन शब्दार्थ	....	९८

***

हिन्दुस्तानी कहानियाँ–२

गंगा-लाभ

अब तो यह कहने-सुननेकी बात रह गयी है कि किसी समय गंगादेअीका जन्म गंगाकी बड़ी मान माननेके बाद हुआ था। कहा जाता है कि गंगादेअीके माता-पिता निपूते थे। अेक संतानका मुख देअनेके लिये वे व्याकुल थे, सारे देवताओंकी पूजा-पातीका जब कोअी प्रभाव न हुआ तो गंगाकी मानता मानी गयी और गंगाने दम्पतिकी अभिलाषा पूरी की। शक्करकी मेढ़ अिस अुपलक्षमें गंगाके किनारे बनवायी गयी, यथाशक्ति गंगापुत्रोंको भोजन करवाया गया और गंगामाअीका प्रसाद जवारभरमें बाँटा गया।

गंगादेअीने जन्मसे ही जैसे गंगाकी आराधनाको संस्कार-रूपमें ग्रहण किया। कोअी अैसा बड़ा तीज-त्यौहार न जाता जब वह अपने गाँवसे सुदूरस्थित गंगामें स्नानके लिये न जाती हों। गंगाने अुसे दिया भी सब कुछ। हीरा अैसा पति अुसे मिला और भीष्म अैसा पुत्र, जो माताके लाख कहने और रोने-धोनेपर भी अिस कारण विवाह न करता था कि अुसकी पत्नी आकर अुसकी वृद्धा माताकी सेवा और अुनके परस्पर प्रेममें बाधक होगी। दुर्भाग्यसे अुसके पतिका देहान्त वृद्धावस्थामें हो गया और अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें गंगादेअीको वैधव्य दुख भोगना पड़ा, पर अिस घटनाने अुसकी धार्मिक प्रवृत्तिको और भी तीव्र कर दिया। अब अुसकी अेक ही साध थी, कि गंगाकी गोदमें प्रवाहित होकर अपने पतिसे जा मिले।

अुसकी यह साध पूरी होनेमें बहुत दिन न लगे। अुस दिन गंगादेअी जैसे ही ब्रह्म मुहूर्त्तमें अुठनेका प्रयत्न करने लगी तो अुसे अपना देह कुछ टूटती हुअी-सी मालूम हुअी, रातमें कुछ नींद भी ठीक न आयी थी। अेकदम अुसके हृदयमें यह बात आयी कि अब अन्तिम समय आ गया। कुछ प्रसन्नता-सी अिस बातको सोचकर हुअी। कुछ दुअ भी हुआ—मेरा बेटा अब अकेला रह जायगा, अुसके खाने-पीने की साज़-सँभाल कौन करेगा। अीश्वर सबको देखने सँभालनेवाला है, यह सोचकर मनको समझाया। अुठनेका अेक बार फिर प्रयत्न किया, पर बढ़ती हुअी कमज़ोरीने अुसे विवश कर दिया। यही सोचते-विचारते दिन निकल आया, तब अुसने आवाज़ दी—'केशव, बेटा केशव!'

केशव हड़बड़ाकर अुठ बैठा। वह भी मुँह-अँधेरेका अुठनेवाला था, पर रातमें महावीरजीके मन्दिरपर भजनमें रात बीत गयी थी, अिसी कारण वह आज सुबह न अुठ सका था। वरना अिस वक़्त तक तो वह संध्या-पूजा समाप्त कर चुका होता था। आँखें मलता हुआ अुठा तो देखा, माँ अब तक पड़ी है। बड़ा आश्चर्य हुआ अुसे; अितनी अुम्र हुअी, माँको अुसने कभी सबेरे अुठनेपर बिस्तरेपर न पाया था। वह जब अुठता तो अुन्हें नहाये हुअे, तुलसी चौरेपर पूजा करते हुअे देखता था।

"क्यों क्या बात है माँ?"—अुसने पूछा।

"मेरा जी आज बहुत ख़राब मालूम होता है, बेटा!" माँने अुत्तर दिया।

माँकी आवाज़की कमज़ोरी केशवके आश्चर्यका कारण हुअी। अैसा क्या हो गया माँको, अेक ही रातमें, जो अितनी कमज़ोर मालूम हो रही

है ! जल्दीसे वह अुनके पास जा पहुँचा, बदनपर हाथ रक्खा तो वह बुख़ारकी गर्मीसे जल रहा था। "तुम्हें तो बुख़ार है माँ !"

"अभी थोड़ी देरसे चढ़ आया है, रातमें नींद भी कम पड़ी थी, सबेरे बदनमें कुछ दर्द मालूम हुआ और बुख़ार चढ़ आया।"

केशवके गाँवके वैद्य बड़े होशियार हैं, फौरन् अुनकी याद आयी। "अभी वैद्यजीको बुलाकर लाता हूँ, माँ !"

चलनेको तैयार होते हुअे केशवका हाथ पकड़कर माँने कहा— "अब कोअी ज़रूरत नहीं है, बेटा ! मेरा मन कहता है कि अब चलनेका समय आ पहुँचा।"

"कैसी बात कहती हो माँ ! ज़रा-से बुख़ारमें अितना घबड़ा गयीं।" कहता हुआ केशव घरसे बाहर निकल गया। फिर भी, चिन्ता और शोक अुसके मनमें बैठ गये। पड़ोसिन काकीको पहले जाकर माँकी देखभाल करनेके लिये घर भेजा, तब स्वयं वैद्यजीके यहाँ दौड़ा।

जब केशव वैद्यजीको लेकर लौटा तो देखा कि माँकी दशा पहलेसे ज़्यादा बिगड़ गयी थी। बढ़ी हुअी कमज़ोरीके कारण बेहोशी आ रही थी और अुनकी आँखें बन्द होती जा रही थीं।

वैद्यजीने भली भाँति परीक्षा करके दवा दी, और वह विधिवत् दी भी गयी, पर दशा सुधरनेके बदले बिगड़ती ही चली गयी। अेक आदमी शहर डॉक्टर लेने भेजा गया। सारा गाँव जुटा था, क्योंकि दोनों माँ-बेटे सदा सबके सुख-दुखमें खड़े होते थे। केशव तो पागल हुआ जा रहा था।

सन्ध्या समय गंगादेअीने आँखें खोलीं। केशव सामने ही खड़ा

था। माँको आँखें ओलते देखकर वह अुससे लिपटकर रोने लगा—"कैसा जी है माँ तुम्हारा ?"

माँ बड़ी मुश्किलसे कह सकीं—"धीरज धरो, बेटा ! किसीके भी माँ बाप ज़िन्दगी भर बैठे नहीं रहते। आज मेरा अन्तिम समय आ गया। अब मुझे करना भी क्या है, बेटा ! तू मुझे गंगालाभ करा देना। फिर ब्याह करके सुअसे रहना। यही मेरी कामना है। अब मुझे रामायण पढ़कर सुनाओ !"

केशव बिलअता रहा।

डाक्टर और वैद्यके सब प्रयत्न माँको न रोक सके और सुबह होते-होते वे केशवको छोड़कर चल बसीं।

टिकठी बनाकर गाँववालोंने शवको गाँवके बाहर तक पहुँचाया, फिर वह बैलगाड़ीपर रख दिया गया। केशव गाड़ी लेकर चला, तो गाँवके बहुत-से लोग साथ चलनेको हुअे, पर केशव अब तक संयत हो चुका था। अुसने सबको वापिस भेजा, क्योंकि पहला पानी हो चुका था और खेतोंकी जुताअी हो रही थी। यह समय खोनेका न था। कहीं धूप निकल आती और खेत सूख जाते तो हल लगना कठिन हो जाता।

* * *

गाड़ीपर माँके शवको लेकर केशव चला तो अुसके स्मृति-पटपर जीवनके पहले चित्र अेक-अेक करके आने लगे। न जाने कितनी बार वह अिसी मार्गपर माँकी गोदमें बैठकर गंगा नहाने गया था। अनेक बार मेलों और पर्वोंपर झुंड-के-झुंड गाँवसे नहाने आते

थे। वह अुन दिनोंको कैसे भुला सकता था ! जब रास्तेके किनारे लगी हुअी दुकानोंसे खिलौने खरीदनेको वह माँसे मचल जाया करता था। और माँ अपना सारी पूँजी बेटेकी साध पूरी करनेमें लगाकर यह भूल जाया करती थी कि वह अपने अथवा घरके लिये किन चीज़ोंको खरीदनेके वास्ते पैसे लायी थी। कतकोके मेलेके वे दिन कैसे भुलाये जा सकते थे, जब गाड़ियोंमें बैठी हुअी स्त्रियाँ गाती हुअी चलती थीं :—

"जतन बताय जैयो, कैसे दिन कटिहैं !"

बच्चे शोर मचाते, अेलते-आते, पुरुष गन्ने चूसते और बिरहा गाते हुअे—'गहरी कुअियाँ अुदाव मोरे राजा !' रास्तेको अपनी मस्तीसे जैसे छोटा कर देते थे।

आज जब अेकाकी वह अपनी माँके शवको लेकर जा रहा था, वे सुअद दिन अेक-अेक करके केशवकी आँखोंके सामने आ रहे थे, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्थाके वे दृश्य जिन्हें वह आज तक बिलकुल भूला हुआ था, सब अुसकी आँखोंके सामने नाच रहे थे। न जाने कितनी बार बैल खेतोंमें फँसे होनेके कारण माँ पैदल ही आयी थी और अपने लाल, केशवको गोदमें लिये हुअे ही अुसने अितना लम्बा रास्ता तय किया था। फिरसे अुसे वह दिन याद आया जब वह युवा हो गया था और रास्तेमें चलती हुअी घूँघट काढ़े हुअे नयी बधुओंको देखकर माँने कहा था—"बेटा ! अैसी तेरी भी दुलहिन आ जाती तो मैं वह सुख देख लेती।" यद्यपि शव कोअी अैसी अमूल्य वस्तु नहीं जिसे कोअी चुरा या अुठा ले जाय, पर केशवके मनमें

बारबार अैसी आशंका-सी अुत्पन्न होती थी कि वह घूम-घूमकर देख लेता था कि गाड़ीपर शव रक्खा है या नहीं।

यद्यपि अुसने विवाह अिसी आशंकासे नहीं किया था कि कहीं बहू आकर माँ और अुसके स्नेह-बंधनमें बाधक न हो, पर अुसे आज अिसी बातका पछतावा हो रहा था कि अुसने अपनी माँकी यह साध पूरी न की।

वे सुखद दिन आज दुखका कारण हो रहे थे, अेक-अेकको स्मरण करके कलेजा मुँहको आता था। रास्ता काटे न कटता था, सौ कोसका हुआ जा रहा था।

* * *

जब केशव गंगाघाट पहुँचा, गोधूलिका समय था। वह फैला खुला प्रदेश सांय-सांय कर रहा था। अुसकी गाड़ीको देखते ही गंगापुत्र, घाटवाला, मेहतर, महाब्राह्मण, सब अिकट्ठे हो गये, वह भी अेक नहीं कअी-कअी अदद। अुनमेंसे ज़्यादातर लम्बे-तगड़े थे। कठिन पेशानियाँ, खूब अुभरे हुअे चौड़े सीने, अुनकी फतुही और अूँची-अूँची धोतियोंसे जैसे निकले पड़ रहे थे। मरोड़ी हुअी, चढ़ी हुअी बड़ी-बड़ी मूँछें चेहरेको भयानक बना रही थीं। सबके पास साम चढ़ी हुअी, चिकनी, मोटी लाठियाँ थीं। केशव अुन सबको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखना चाहता था, क्योंकि वे अुसकी माताके स्वर्गारोहणमें सहायक होनेवाले थे। पर, अुनपर दृष्टि पड़ते ही हृदयमें न जाने क्यों भयका संचार हुआ; कदाचित् अुनके चेहरोंपर अुसे सहानुभूतिके दर्शन न हुअे, अिसीलिये अुसे अुनकी दृष्टि बिल्कुल अुन कसाअियोंसे

मिलती-जुलती मालूम हुअी जो बकरेके बाज़ारमें आनेपर यह अन्दाज़ लगाते हैं कि अिस बकरेमें कितना गोश्त है। वह अुन्हें देखकर घबड़ा गया। अुसे अैसा मालूम हुआ कि अुसने गाँवसे किसीको साथ न लाकर ग़लती की। अुनकी ओर देखनेका अुसको साहस न हो रहा था। जो घूमकर पीछेकी ओर देखा तो अुसका मित्र मोहन साअिकिलपर दौड़ता हुआ घाटकी ओर आ रहा था। अुसे देखकर केशवको गाड़ीसे अुतरनेका ध्यान आया, वह अुतरा। अितनेमें मोहन आकर अुससे लिपट गया। दोनों ही मिलकर खूब रोये।

संयत होकर मोहनने पूछा—"क्योंजी, तुम अकेले क्यों आये? गाँवसे अेक आदमी भी न लाये!"

केशव बोला—"आनेको तो बहुत-से लोग तैयार थे, पर मैं ही नहीं लाया। आजकल कामका वक़्त है।"

"भाड़में जाय अैसा काम, काम तो रोज़ ही होते रहते हैं। अेक रोज़ न सही। टोला-पड़ोसके लोग होते कबके लिये हैं? अिस दिन भी काम न आये तो कब आयेंगे? अच्छे तुम मना करनेवाले और तुमसे भी अच्छे वे, जो तुम्हारे मना करनेसे मान गये! मैं तो तीन रोज़से बाज़ार गया था, दूकान लेकर तीसरे पहर लौटा तो मालूम हुआ कि अम्मा नहीं रहीं और तुम अुन्हें लेकर अकेले यहाँ आये हो!" 'अम्मा' कहते-कहते मोहनकी आँखोंमें आँसू आ गये। अुसने अपनी माँके न रहनेपर केशवकी माँको ही माँ समझा था, और माँने भी कभी अुसे केशवसे कम न समझा था। अुन्हीं स्नेहमयीकी मृत्युको सुनकर

वह गाँवमें कैसे रुक सकता था ?" फिर अुसने अपने आपको संयत किया, केशवसे कहकर शवको गाड़ीसे अुतारा और बैल खोलने लगा।

बैल खोलते हुअे अुसने केशवसे पूछा—"लकड़ियोंके लिये कहा ?"

"अभी कहाँ, मैं तो आकर खड़ा ही हुआ था, वैसे ही तुम आगये।"

"कितनी आयेगी लकड़ी ?" केशवने पूछा।

अिसके पहले कि मोहन जवाब दे, घाटवालोंमेंसे अेक बोल अुठा—"बारह मनसे कम क्या लगेगी ?"

"बारह मन !" मोहन चौंककर बोला—"हाड़-ही-हाड़ तो हैं, क्या होगा बारह मनका ?"

"लोगोंको जब लकड़ी तकमें किफ़ायत करनी होती है तो पता नहीं जलानेकी सोचते ही क्यों हैं ? गाड़ दें कहीं वहीं, और छुट्टी पा जायँ। सब झंझटसे छुट्टी मिले।"—अुनमेंसे अेक अैसी आवाज़से बोला जो धीमी तो ज़रूर थी, पर अिन लोगोंके सुननेके लिये पर्याप्त थी।

सुनकर मोहनको बड़ा बुरा मालूम हुआ, पर अुसने ज़ब्त किया। केशवने कहा—"जितनी ये लोग कहें अुतनी मँगा लो, मोहन !"

"नहीं जी, हमारा काम है। हमें समझना-बूझना है। यों तो आठ ही मन काफ़ी है, पर मँगा लो दस मन।"

गंगापुत्रके तेवरोंमें बल पड़ गये, पर अुसने कहा—"हाँ, हाँ, जैसा ठीक समझो। आप दाग़ दोगे, बाबूजी !" केशवकी ओर देखकर अुसने कहा—"तो आप बाल बनवा लो।"

केशवने कहा—"अच्छी बात है।"

गंगापुत्रने ज़ोरसे आवाज़ दी—"लछना कहाँ है रे, चल बार बना आयके !"

"आयेन पंडित !"—लछनाकी आवाज़ बहुत दूरसे सुनायी दी।

पंडितने वहींसे फिर लकड़ीवालेको आवाज़ दी—"जियावन, दस मन लकड़ी भेज देव !"

"अच्छा महाराज !"—जियावन बोला।

अितनेमें नाअी किस्मत लिये हुअे आ गया।—"सवा रुपया होगा अिस वक़्त, मालिक !"

"सवा रुपया !" मोहनने कहा—"अेक आदमीकी हजामतका सवा रुपया !"

अुनमेंसे कोअी फिर वैसे ही बोला—"तेलीका तेल जले, मसालची....."

"क्या कहते हो तुम लोग, हम और वह क्या अलग, अलग हैं ?" नौआ बोला—"मालिक, यह तो गंगाघाट है, जो कुछ दे डालोगे दान-धरममें शामिल होगा। हम दिन ही माँ दस आनेसे कम नहीं लेते हैं। अिस वक़्त सवा रुपयेसे कममें न बनावेंगे।"

"सवा रुपया तो हम नहीं देंगे।'—फिर भी मोहनने कहा।

"तो फिर मैं नहीं बनाअूँगा !"—कहकर नौआ चल दिया।

"बनवा लीजिये बाबू, बनवाना तो है ही, और अिस वक़्त दूसरा नाअी भी तो यहाँ न मिलेगा। लौट आ लछना, अेक रुपया ले लेना।"—पंडितने समझौता कराया।

लछना लौटा और केशवका सिर मूँड़ने लगा। मोहनने मन ही मन कहा—"कैसी मिली भगत है!"

केशव सोच रहा था—"यह कैसा बर्ताव है अिन लोगोंका, मालूम होता है जैसे लूटनेके लिये ही बैठे हैं। जिसको देखो बढ़कर बोल रहा है। जिन ग़रीबोंके पास कुछ न होता होगा अुनका पार कैसे लगता होगा?"

केशवके बाल बन जानेपर शवको नहलानेके लिये गंगापुत्रने कहा। शवको केशव और मोहन लेकर चले। अुन माँकी लाश जिनके शरीरमें कुछ न था, अिस समय केशव और मोहन दोनोंको ही भारी लग रही थी। बोझ अुठानेसे जो कष्ट मनुष्यके हृदयमें होता है वह तो अुनके हृदयोंमें किंचित् मात्र भी न था, पर अेक आशंका और भय था कि कहीं अैसा न हो कि शव हाथसे छूट जाय। ज़मीनपर गिरनेसे शवको चोट नहीं लगती, पर अुस समय मनुष्य अितने भावुक हो जाते हैं कि दुर्घटनावश अगर कभी अैसा अुनके हाथसे हो जाता है तो अुन्हें जितना दुःख होता है अुतना शायद बच्चे या बीमारके हाथसे छूट जानेपर भी नहीं होता।

रात हो चुकी थी और घना अँधेरा सारी पृथ्वीपर फैल गया था, आसमानमें बादलोंने घिरना शुरू करके अन्धकारको और भी घना कर दिया था। घाटवाला केशवसे पैसे लेकर अेक बड़े कुल्हड़में आधा सेर तेल ले आया था और अुसीसे अेक मशाल अुस घने अँधेरेको दूर करनेके लिये जला ली गयी थी। मशालकी जलती हुअी लौकी मोटी रेखा अुस अन्धकारकी विशालताको सरपर अुठाये हुअे-सी प्रतीत होती

थी, जैसे किसी बहुत ही पतले तनेपर कोओी डालियों और पत्तियोंका घना-सा समूह दूरसे टँगा हुआ दिखायी दे रहा हो।

केशव और मोहन शवको लिये हुअे सँभल-सँभलकर गंगामें अुतरनेका प्रयत्न कर रहे थे, पग-पगपर फिसलनेका डर लग रहा था। दुखका अेक तूफ़ान-सा अुमड़कर अुनके हृदय व मस्तिष्कको झकझोरे डाल रहा था, जिसके कारण अुनका सारा शरीर शिथिल-सा होता हुआ प्रतीत हो रहा था! घाटवाला मशाल लिये बिलकुल किनारेपर आ अड़ा हुआ था, और अुन्हें रास्ता बताता जाता था—"बस बस, अब आगे न जाना, अुधर गहरा है।" जब कि केशव और मोहन यह सोचकर आगे बढ़े जा रहे थे कि प्यारी माँके शवको किनारेके गन्दे पानीमें क्यों नहलायें!

मशालकी रोशनी अुस अन्धकारको दूर करनेमें समर्थ न हो रही थी, क्योंकि तेलमें पानी मिला हुआ था। घाटवाला बार-बार मशालपर कुल्हड़से तेल डालता था, पर तेल रोशनी कम बढ़ाता था, चिड़-चिड़ाहटकी आवाज़ ज़्यादा पैदा करता था।

शवको पानीमें डुबकी देकर नहलानेकी क्रिया पूरी हो गयी, तो गंगापुत्र बोला—"ज़रा बालू मुँह ओलकर लगा दो।" केशवने रोते हुअे वह भी किया। फिर दोनों ही लड़खड़ाते पैरोंको जमाते हुअे शव लेकर अूपर आये।

लकड़ी लानेवाले मज़दूरोंने तब तक लकड़ियाँ ढेर कर दी थीं। वे मज़दूरीके लिये अड़े हुअे बेसब्रीसे तगादे कर रहे थे। केशवने सोचा यह झंझट भी सिरसे हटा दूँ। रुपयेकी तीन पसेरी लकड़ियाँ मिली थीं।

छब्बीस रुपये पौने ग्यारह आने लकड़ीवालेने अुसके लिये। फिर सौ गज़से लकड़ी लानेकी मज़दूरी मज़दूरोंने अेक आना रुपयाके हिसाबसे वसूल की। मोहन झुँझला-झुँझला पड़ता था—"सब तरहसे जैसे लूट मची हुअी है। जैसे गिद्ध बेदर्दीसे शवको नोचते-अुसोटते वक़्त दया, करुणाको पास नहीं फटकने देते हैं, वैसे ही अिन सबका हाल है!' वह अुठा और चिता बनाने लगा तो अुसने देखा कि लकड़ियाँ दस मन क्या, आठ मन भी न थीं, पर कुछ बोला नहीं।

गंगापुत्रने अपनी कड़कती हुअी आवाज़में केशवसे कहा—"अब तुम कर्रोय जाव, ये चकुआ लेव और लाश टिकठीसे अलग कर देव।"

केशवने कहा—"चाकूकी क्या ज़रूरत है!" और वह सुतली खोलनेका प्रयत्न करने लगा, पर सुतली भीग जानेके कारण अुठती ही न थी। तब अुसे विवश होकर चाकू लेना पड़ा। चाकूसे वह बड़ा सम्हल सम्हलकर सुतली काट रहा था, डर लगता था कि चाकू कहीं शरीरमें न भुक जाय। यद्यपि निर्जीव शवको चोट आनेका अथवा घायल होनेका कोअी अन्देशा न था, पर केशवका हाथ काँपता हुआ ही चल रहा था।

चिता लग जानेपर लाश अुसपर रख दी गयी। गंगापुत्र अेक कोटेमें गंगाजल भरकर ले आया था—"लेओ जी, तुम यहाँ बैठो" केशव वहीं चिताकी बग़लमें अुकड़ूँ होकर बैठ गया। गंगापुत्रने बिन्दु-मात्रेण संस्कृतके अनुसार हर शब्दमें अनुस्वार लगाकर अेक शुद्ध-अशुद्ध मंत्रकी पैरौडी-सी पढ़ना शुरू की। साथमें कहता जाता था—"हाथमें जल लै लेव, सवा रुपया लै लेव, अपनी माताका नाम लै लेव, अमुक गोत्र, कौन-से गोत्र है—भारद्वाज।"

अिस तरह न जाने कितनी विधि निकालकर सवा-सवा रुपये और दस-दस पाँच-पाँच आने करके अुसने दस-ग्यारह रुपये केशवसे अैंठ लिये। हर विधिके बाद अेक टका सांगिताका चलता था। केशव भी मनमें सोचने लगा था कि यदि यही क्रम चलता रहा तो कहीं दिवाला न निकल जाय। यह लोग तो मालूम होता है कि जैसे यह समझते हैं कि हरअेक आदमी कारूँका ख़ज़ाना अपने साथ लेकर आता है। अिन्हें तो दयालु होना चाहिये। अेक-से-अेक दुखी ग़रीब अिनकी शरनमें अिस आशासे आते हैं कि ये मृत आत्माके शान्ति पानेमें सहायक होंगे। ये तो धर्मराज हैं। फिर भी अैसी निर्ममता कैसे बर्तते हैं!

गंगापुत्रने कहा—"गंगाके किनारे अब अपनी माताके नामपर पाँच गोदान कराय देव।"

"पाँच गोदान कितनेके होंगे महाराज!"—केशवने पूछा।

"ढाअी-ढाअी रुपयेसे कमके क्या होंगे।" गंगापुत्रने दृढ़तासे कहा।

"यानी साढ़े बारह रुपये। लगभग अितने ही तो मैं पहले दे चुका हूँ।"

"दै चुके हो तो धर्मके नामपर दै चुके हो। अपने माँका परलोग बनवैके लिये दै चुके हो। अैसे तो कबहूँ आयके हमका दै नहीं गये रहौ।" गंगापुत्रने कड़ी बोलीमें कहा—"गौदान न कराओगे तो यमराजके हियाँ कुत्ता-नोचन मचि है। अी तुम्हार महतारी है। बड़ी साधसे पालिस-पोसिस होअी कि हमार बेटवा लोक-परलोक दोनों बनाय अी। कितनी-कितनी तकलीफ़ तुम्हरे मारे सहेस होअि है, और तुम

हौ जो ओहके वास्ते चार पैसाका मुँह तक रहे हौ।"

मोहनसे अब बर्दाश्त न हुआ। अुसका ख़ून बड़ी देरसे धीरे-धीरे औल रहा था, अब अेकदम अुबल पड़ा, चिल्लाकर बोला—"ये सब हमारे समझनेकी बात है, तुमसे अिसका कोअी मतलब नहीं। जब हम अितना नहीं देना चाहते तो..... ।"

"नहीं देना चाहते" का का मतलब ? हियाँ देना पड़िहै, यह गंगाघाट है। जब तक दान-दच्छिना पूरी न होअिहै लास अैसे पड़ी रहिहै।"—कड़ककर बोला गंगापुत्र। अुसकी आँखें सुर्ख़ हो गयीं।

मोहनने अड़े होकर ज़ोरसे कहा—"तो तुम लाशमें आग नहीं लगाने दोगे !"

"हाँ, हाँ, नहीं लगाने देंगे, तुम अितना अकड़त काहे हौ, हर बातमें ! मलूम नहीं है सरकारका टिकस देत हैं ? हमारी मर्ज़ी बिना यहाँ कौनौ काज नहीं होअी सकत है !"

"तो तुम मनमानी घरजानी करोगे ?"

"करेंगे तो तुम रोक लेअुगे ? बड़े बारहाँ हौ !" गंगापुत्रने कहा—"तुम्हें मालूम है, अेह ज़मीनके पीछे सालमाँ दुअी-अेक कतल हुअी जात है, दुअी-चारका फाँसी-डामिल हुअी जात है। जो हम लोगनका मिलत न होय तो मूँड़ दै-दैके अी ज़मीनपर काहे कब्ज़ा रक्खा जाय। अब तक अगर कोअी बराबरका होता तो अेकाध मूँड़ फूट चुका होता, कमज़ोर समझके जितना हम चुपात जाअीत हैं अुतना तुम मूँड़पर चढ़त जात हौ।"—कहकर गंगापुत्र अड़ा होनेको हुआ, अन्य वहाँ अड़े लोगोंने भी अपनी लाठियाँ सम्हाल लीं।

केशवने देखा सब नक्शा ही बदला जाता है, तो वह हाथ जोड़कर खड़ा हो गया—"महाराज, हम तुम्हारे शरणागत हैं, हमारे ऊपर अितना क्रोध !" फिर मोहनसे कहा—"तुम चुप रहो मोहन, देश-काल देखकर बातचीत किया करो।"

केशवके शब्दोंने सबको शान्त कर दिया। मोहन भी चुप हो गया—गंगापुत्रने भी सवा छः रुपयेमें गोदान करा दिये। पाँच ब्राह्मणोंका भोजन बोल देनेको कहने लगा। केशवने किसी तरह ख़ुश मद करके दोपर अुसे राज़ी किया। अन्तमें वह अपनी दक्षिणा माँगने लगा। पाँचसे अुसने मोल-भाव शुरू किया, बड़ी मुश्किलसे ढाओपर तैयार हुआ। अब अुसने केशवसे आग देनेको कहा।

केशवने अपने सारे शरीरकी शक्ति हाथोंमें संचित करके रोते-बिलखते हुअे जलता हुआ पतावर लेकर चितामें आग दी। अब तक जैसे अुसे अेक सहारा-सा बना हुआ था, अब अुसे पूर्ण रूपसे मालूम हुआ कि अुसका प्रथम तथा अन्तिम सहारा टूट गया, अब अुसका कोअी न रहा, वह किसीका न रहा।

चिताकी आग धीरे-धीरे बढ़कर फैलने लगी, हाथ-पैर सब अुसने घेर लिये। अुस घने अन्धकारको भेदकर लपटोंने अूपर अुठनेका प्रयत्न किया।

आगके बढ़ते ही हवा चारों तरफ़से घिर-घिरकर अुसकी तरफ आने लगी और आग बढ़ने लगी।

"अब नहाओ भैया चलके !"—घाटवालेने कहा।

"अभीसे ?" केशवने कहा—"लाश जल जानेपर आग व फूल पानीमें प्रवाह करके राम राम लिअके जायँगे ।"

"यह हम सब लोग कर लेंगे भैया, क्यों हलकान होते हो, और हम सब लोगोंको भी करते हो। चलो नहाओ चलके। ब्राह्मणोंको मिठाअी दिलवाय देव भुआय गये हैं। कुछ जल पियो और अपने घरका जाव ।"

गंगापुत्रने कहा—"अिसमें कोअी दौलत थोड़े ही रअी है जो हम लोग निकाल लेंगे ? सबै लोग लास जलायके अेही तरह छोड़ जात हैं। जलि जायपर राअ गंगाजी मा परवाह करि दीन जात है।"

मोहनने आँखों-ही-आँखों केशवसे पूछा—"क्या कहते हो केशव ?" केशवने वैसे ही कहा—"जैसा तुम ठीक समझो ।"

अुस वातावरणने अुन दोनोंका मन बोझिल कर दिया था। रह-रहकर सियारोंकी आवाज़ सुनायी दे रही थी। कुत्ते अिस बुरी तरह आसपास घूमते थे, मालूम होता था टूट पड़ेंगे। थोड़ी दूरपर कुछ कुत्ते पानीमें लड़ रहे थे, कोअी अध-जला शव अुनके झगड़ेका कारण था। चिताके प्रकाशका घेरा अितना छोटा था, जैसे अन्धकार अुसे चारों अोरसे दबाये ले रहा हो। बढ़ी हुअी गंगा हहर-हहरकर बह रही थी। अुसे देखकर भी अिस समय श्रद्धासे अधिक भय अुत्पन्न होता था।

दोनोंने चलना ही ठीक समझा। चिताको अत्यन्त श्रद्धासे दण्डवत करके वे नहानेको घाटकी तरफ़ चले।

मशालके प्रकाशमें फिर गंगामें अुतरकर नहाये। गंगापुत्र अन्य दो ब्राह्मण और घाटवाला अुन्हें अभी भोजनके लिये घेरे थे। बड़ा प्रयत्न

करके अुन लोगोंने दूकानें अुलवायीं, क्योंकि रात काफ़ी हो चुकी थीं, दूकानें बन्द हो गयी थीं।

केशवने कहा—"दो ब्राह्मणोंके लिये मिठाअी दे दो।"

"कितनी ? कितनी ?" दूकानदारने पूछा।

"तुम्हें माळूम नहीं है, सवा-सवा सेर आत हैं। आज कोअी पहली दफ़े आये हैं तुम्हारी दूकानपर, जो पूछ रहे हो ?"

"सवा-सवा सेर !"—केशवने आश्चर्य प्रकट किया। अुससे न रहा गया।

'हाँ, हाँ, झिलायके देअ लेव। अेक-अेक अैसा आदमी यहाँ आता है जो हज़ार रुपया दै जाता है, तुम्हें भरपेट अवावै मां मुश्किल पड़त है !"—ब्राह्मण देवता बोले।

किसी तरह सेर भरपर वे राज़ी हुअे। दोनों ब्राह्मणों और गंगापुत्रोंने सेर-सेर भर लिया। आध सेर घाटवालेने लिया।

मोहनने पाव-भर मिठाअी लेकर किसी तरह दो-अेक बर्फ़ी केशवके मुअमें ठूँसकर अुसे पानी पिलाया, ख़ुद कुछ गलेसे अुतारकर पानी पिया और तब गाड़ी जोतकर चले। फिर भी, जब तक वह चले न गये, कहीं मेहतर पैसा माँगने आया, कहीं डोम। बराबर नोच-असोट जारी रही।

वहाँसे निकलकर चले तो मोहनका क्रोध फिर अुमड़ा—"अैसे बदमाश हैं साले, ओफ् ओह ! पावें तो गर्दन दबाकर सब छीन लें।"

अब केशवकी भी श्रद्धा भरभराकर गिर पड़ी। "ये तो जैसे

आदमियतको पास ही नहीं फटकने देते हैं। आदमी ऐसा निर्मम हो सकता है, यह मैंने कभी न समझा था।"

अुनकी गाड़ी अन्धकारको चीरती आगे बढ़ती गयी।

गंगा-किनारे अब फिरसे गंगापुत्र घाटवासी और मेहतर इत्यादि अिकट्ठा हो गये थे। वातावरण अुस समयका कुछ अजीब भयंकर-सा हो गया था। हवा शब्द करती हुअी भयंकर रूपसे चल रही थी, जिसमें कभी-कभी अेकाध छींटे पानीके भी आ जाते थे। अुस काली रातमें खड़े हुअे देवाकार वे सब भूतों-से प्रतीत होते थे। गंगापुत्रके आदेशपर मेहतरने गंगासे पानी अुलीच-अुलीचकर अधजली चिता बुझा दी। अुस गंगादेअीकी अधजली लाश, जिसकी पूजा-पाठ करते ही अुम्र बीती थी, मेहतरने घसीटकर गंगामें फेंक दी। फिर सब लकड़ियाँ बुझा ली गयीं और माँ-बहनकी गाली-गलौजके साथ अुनका आपसमें बँटवारा हुआ।

घाटवाला बोला—"अब का कहत हौ पंडित! आज कुछ माँग-बूटी न छनैगी?"

बुड्ढे डोमके मर जानेपर अुसका लड़का अभी नया ही गाँवसे आया था, कच्चा था। अुसे यह सब देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था, पर कुछ कह न पा रहा था। अब रुक न सका, बोला—"तुम्हौं अेह बखत भाँगकी चलायेव!"

"अरे हट गदहा नहीं तो, हियाँ अी रोज़का काम आय, अैसे जो होय तो कबहूँ नसा-पानी हुअी न पावे; है न पडित, छनिहै न?"

"छनिहै, और ज़रूर छनिहै, कौनौ-कौनौ दिन कैसा नखिदूद

होओ जात है कि न कुछ मिलै न जुलै और नसा-पानी तकका बखत न मिलै।" गंगापुत्र बोला।

"अब अस न कहौ, पंडित," मेहतर बोला—"पचीस-तीस तो तुम अेहीसे मारेव।"

"तो मारेन तो का भवा, काम नहीं करावा! अू कहौ सार मूँजी साथ माँ लगि गवा आयके, नहीं कुछ और पौतेन। अू सार अस टर्र-टर्र लगाये रहै कि मन होत रहै टेटुआ दबाय देअी, मुला हम कहा, को हत्या ले।"

घाटवाला बोला—"हटाओ अी रहबार, चलौ अब हमै।"

"हाँ, हाँ, चलो"—कहकर वे सब गंगाके किनारेसे झोंपड़ियोंकी तरफ अँधेरेमें चल दिये।

ग़रीबोंका स्वर्ग

यदि जीनेकी अिच्छाका अन्त हो जाय तो मनुष्य अेक मिनिट जीवित नहीं रह सकता। अपनी साधारण गतिसे मौत न आये तो अैसा मनुष्य आत्महत्या करके मर सकता है। रमेश कोशिश करनेपर भी आत्महत्या न कर सका। अिसका कारण कदाचित् यही था, कि अभी वह अपने लिये नहीं, तो कम-से-कम अपनी स्त्री रानीके लिये जीवित रहना चाहता था।

तीस वर्षका नवयुवक, हाथ-पाँव मज़बूत, दिल-दिमाग़ दुरुस्त, जीवनको अुत्साहसे पूरित करनेके लिये सर्वगुणसम्पन्न नारीका घरमें निवास, अितनेपर भी वह संसारसे विरक्त क्यों है ? अिसी प्रश्नपर अुसने बहुत बार बहुत तरहसे विचार किया, पर अुसे कोअी सन्तोष-जनक अुत्तर न मिला।

अुसके हृदयमें कोअी बहुत बड़ी महत्त्वाकांक्षा नहीं थी। और होती कैसे ? सारा सवाल सिर्फ अेक सवालके हल करनेमें चला जाता था। वह सवाल था—"अपने और रानीके लिये पेट-भर भोजन प्राप्त करना।" गाँवके बाहर अपने विस्तृत क्षेतोंके स्लेटपर अपने परिश्रमकी पेंसिलसे वह रोज़ सवेरे यह सवाल हल करनेको जुटता था और शामतक जुटा रहता था। परंतु ज्यों ज्यों अुसने अपना परिश्रम करना बढ़ाया, त्यों त्यों यह प्रश्न भी जटिल होता गया।

बचपनमें अुसने अच्छे दिन देखे थे। अच्छेसे मतलब है, कभी-कभी अुसे पेट-भर भोजन मिल जाता था। घी और दूधके स्वादुकी भी अुसे थोड़ी बहुत याद बनी थी। परंतु वह माँ-बापकी बदौलत था, जिन्होंने अपने जीवनको क्षेतोंपर निछावर करके अुसके लिये सुखके दिन प्राप्त किये थे। किसीके माँ बाप सदैव नहीं रहते और रमेशके भी नहीं रहे।

अिधर ग़ल्ला सस्ता हो जानेसे कठिनाअियाँ दूनी हो गयीं। क्षेतोंपर ज़मींदारका हक़ था। कअी पुश्त जोतनेपर भी अुसका मौरूसी हक़ नहीं जम सका था। अिससे ज़मींदार मनमाना लगान वसूल करता था और अुसे झख मारकर देना पड़ता था। न देता तो करता

क्या ! किसानका लड़का था, बिना मेहनत किये वह रह भी तो न सकता था ।

प्रतिवर्ष सालके अंतमें अितना कर्ज़ अिकट्ठा हो जाता कि अुसे सारी अुपज अलिहानमें ही महाजनके हवाले कर देनी पड़ती । जैसे अन्य सब किसान नया अन्न नहीं, नयी चिन्ताओंका बोझ लेकर घर लौटते, वैसे ही वह भी खाली मन और खाली हाथ घर लौटता । क्रमशः हालत बिगड़ती गयी । बैल बिके, जानवर नीलाम हुअे । थाली लोटा कुर्क हुआ । केवल छप्पर और छप्परके नीचे वह और रानी, दो व्यक्ति शेष रहे ।

अितनेपर भी किसी तरह अुसने खेतीका काम जारी रक्खा । मँगनीके बैल मिल गये । पत्तलों और मिट्टीके बर्तनोंमें खाने-पीनेका काम चलता रहा । अिस बार भी सदाकी भाँति जबतक फ़सल खड़ी रही अुसकी अाशा बँधी रही । शामका थका-माँदा जब घर आता तब रानीसे कहता—"राम चाहेगा तो अिस साल सावन तक चूल्हा सुलगेगा और अुसके बाद सौंवा-मकरा हो जायगा ।"

अिसपर स्त्री कहती—"पेट तो किसी तरह जीआ लेंगे, पर लाज रखनेके लिये कपड़ा ?"

अिसपर दोनों चुप हो जाते । फिर कुछ अिसी तरहकी बातें करते । जाड़ेकी रातें थीं । यथेष्ट कपड़े थे नहीं । वे बेचारे आगके सहारे अिसी तरहकी बातोंमें रात बिता देते ।

होलीपर रमेश पके हुअे गेहूँ लाया और रानीने अुसी दिन कूट-पीसकर, पहलेसे रखे हुअे थोड़े-से सरसोंको तेलीके यहाँसे तेलमें बदल-

कर, तेलकी पूड़ियाँ बनायीं। पीनेको भंग नहीं मिली, न सही; लगानेको अबीर नहीं मिला, न सही; कपड़ोंपर रंगके छींटे नहीं पड़े, न सही; पेट तो भरा। और रमेश जब खाने बैठा, बोला—"बड़ी स्वादिष्ट हैं! पड़ोसीके लड़केको पूड़ियाँ ज़रूर दे देना। कौन जाने शायद उनके यहाँ चूल्हा भी न जला हो। बेचारा लड़का कैसे जानेगा कि आज होलीका त्यौहार है!"

"वह तो सबेरे ही खा गया।"

"धन्य रानी! तू बड़ी दयावान् है। मेरी एक बात सुनेगी?"

"कहो।"

"कौन जाने, अब कब पूड़ियाँ बनें; इसलिये आ, आज मेरे साथ बैठकर दो पूड़ियाँ खा ले।"

"नहीं. पूड़ियाँ बहुत हैं। तुम खा लो. फिर मैं खाऊँगी।"

फ़सल कटकर खलिहानमें पहुँची। जिस दिन ग़ल्ला तैयार हुआ, महाजन भी जा डटा। साल-भरका हिसाब जोड़ा गया तब मालूम हुआ कि रमेश दो मन घाटे दे तो पूरा पड़े। यह दो मन नये कर्ज़के रूपमें लिखकर महाजनने सारा ग़ल्ला अपने अधिकारमें कर लिया।

रातको रमेश अपने भूसापर लेटा और महाजनका नौकर रमेशके ग़ल्लेपर।

चैतकी चाँदनी रात थी। दूरसे फूलोंकी सुगंध आ रही थी। सब किसान अपने-अपने खलिहानमें मस्त पड़े सो रहे थे। केवल रमेश जग रहा था। उसकी सम्पत्ति आज उससे छीन ली गयी थी। उसे कैसे नींद आती?

पड़ा-पड़ा वह अपनी मुसीबतोंपर सोचता रहा और अपने भूसेके ढेरपरसे अपने ग़ल्लेकी ओर बड़ी देर तक अिस तरह टकटकी बाँधकर देअता रहा जैसे दुहे जानेके समय गायका बड़छा अपनी माँके थनकी ओर देअता है। रमेशको किसी तरह यह विश्वास नहीं हुआ कि वह गल्ला अुसका नहीं है। बोया अुसने, सींचा अुसने, काटा अुसने, माड़ा अुसने और मालिक बन गया महाजन। क्योंकि महाजनने अुसे कर्ज़ दिया था। फिर जितना दिया था, अुसका ड्योढ़ा ले गया। यह कहाँका न्याय है?

रमेशके जीमें आया—"सब लोग सो रहे है। क्यों न जितना अेक बारमें ले जा सकूँ ले जाकर घरमें रख आअूँ?" दूसरे ही क्षण अुसके हृदयमें आवाज़ अुठी—"क्यों, चोरी करोगे? अीश्वरसे बचकर कहाँ जाओगे?"

पेटमें भूअकी ज्वाला स्त्रीकी चिन्ताके साथ प्रज्वलित हो अुठी। अुसने कहा—"अीश्वर कोअी चीज़ नहीं। और भूअेका अीश्वरसे क्या मतलब? यदि अीश्वर है तो वह भूअोंको भोजन क्यों नहीं देता?"

अिन प्रश्नोंका अुत्तर देनेके लिये, पाप-पुण्य, स्वर्ग नरकको प्रमाणित करनेके लिये धर्मशास्त्र-पारंगत काशीका कोअी पंडित वहाँ न था। कलकी चिन्ताने ज़ोर मारा और रमेश बिना विशेष तर्क-वितर्क किये अुठकर अपने झाबेमें ग़ल्ला भरने लगा।

ज्यों ही यह लेकर चला, महाजनका नौकर जागकर और चोर-चोर कहकर चिल्लाने लगा। अीश्वरने जिसे नहीं गिरफ़्तार किया था अुसे मनुष्यने पकड़ लिया।

बात-की-बातमें वहाँ अनेक आदमी जमा हो गये। किसीने रमेशको बुरा भला कहा, किसीने अुसे मारा। महाजनके नौकरोंने रस्सेसे पीछेकी ओर अुसके दोनो हाथोंको बाँध दिया और अुसे घसीटते हुअे रातो-रात थानेकी ओर ले चले।

रानी भी रोती-सिसकती वहाँ आयी। अुसने कहा—"महाजन डेढ़ी लेता है, अुसे कोअी नहीं पकड़ता और किसान अपनी ही कमाअीमें से थोड़ा भी लेने लगता है तो वह बाँधा जाता है। पर अुसकी कौन सुनता है!"

चाँदनी रातमें असमर्थ रमेश और अुससे भी अधिक असमर्थ अुसकी स्त्रीने अेक दूसरेको देखा। दोनोंकी आँखोंमें आँसू और चेहरेपर घोर अुदासी छाअी थी। वसन्त ऋतुकी अुस चाँदनीको जरा भी दया न आयी। अुसने दोनों प्रेमियोंको बलपूर्वक अेक दूसरेसे अलग कर दिया।

२

सबेरा हुआ। साल-भरकी कमाअी घर आनेवाली थी। परंतु कमाअीके साथ रानी कमानेवालेको भी आज गँवा बैठी थी। अैसे अवसरोंपर गाँवोंमें, खासकर स्त्रियोंमें, सहानुभूतिकी कमी नहीं होती। पास-पडोसकी स्त्रियाँ रानीके घर आ बैठीं और अुसे समझाने लगीं। परन्तु रानीका जैसे सर्वनाश हो गया हो, जैसे अुसका सर्वस्व लुट गया हो, रह-रहकर कहती—"वे चोर नहीं हैं। वे किसीका अेक दाना भी नहीं छू सकते। अपना गल्ला था, अपने घर ला रहे थे। महाजन अलिहानमें लेनेवाला कौन होता है? घरमें अुसने दिया था।

घरसे लेता। कहीं भागे थोड़े ही जा रहे थे। अिस साल नहीं तो पारसाल तक अुसका चुका देते।"

आह! अुसका नाम रानी किसने रक्खा था? रानियाँ क्या अैसी ही असमर्थ होती हैं? अुसे धन-वैभवकी चाह नहीं थी। अिस संसारमें अुसका अेकमात्र अवलम्ब, परिश्रमसे चूर, भूखकी मारको अुससे भी अधिक सहनेवाला अुसका पति था। और वह भी अुससे छिन गया।

"वे कब आयेंगे?"—रानीने अपनी पड़ोसिनोंसे पूछा।

अेकने अुत्तर दिया—"आज थोड़े ही चले आते हैं। अभी अुनके हाथमें हथकड़ी पड़ेगी। वे जेलखानेमें बंद होंगे। वहाँसे अदालतमें ले जाये जायँगे। वहाँ हाकिम अुनसे पूछेगा—'तुमने चोरी की?' वे कहेंगे—'हाँ!' बस सज़ा सुना देगा। वे जेलखानेमें बंद हो जायँगे। सज़ा पूरी भुगत चुकेंगे तब लौटेंगे।"

दूसरीने अुत्तर दिया—"बिलकुल ठीक। पारसाल मेरे देवता पकड़े गये थे। मैं अुनके साथ-साथ जेलके फाटक तक और फिर अदालत तक गयी थी। मैंने अपने गहने बेंच डाले और सिपाहीको मिठाअी खिलायी, तब मैं अुनके साथ-साथ जाने पायी थी। अदालतमें पहुँचकर मैंने भी कहा कि कुछ कहूँ, पर बोलने नहीं पायी। जान पड़ा कुछ बोलूँगी तो मुँह पकड़ लिया जायगा। मुझसे कहा गया—'अपना वकील ले आ।' और वकील लेता है पैसा। फिर जैसा पैसा हो, वैसा वकील मिलता है। मैंने देख लिया है कि अदालतमें वही जीतता है जिसके पास पैसा बहुत होता है। पैसा देकर वह बहुत-से आदमी जमा कर लेता

है, जो अुसकी तरफ़से बोलते हैं। और ग़रीब बेचारेकी तरफ़से कौन बोले! मेरे देवताको सज़ा हो गयी। पर अुन्होंने ज़मींदारको मारा था। वे मारकर जेल गये थे और रमेशने तो चोरी की है। रमेशका कोअी मुँह भी नहीं देखेगा।"

रानी अुत्तेजित हो अुठी, बोली—"अपनी चीज़ अपने घरमें ला रहे थे बहिन! चोरी काहेकी!"

अेक पड़ोसिनने कहा—"सुनगा पासीको पारसाल छः महीनेकी सज़ा हुआ थी। पर अुसका क़सूर क्या था! अुसने ज़मींदारके खेतमें सिर्फ़ बाजरेकी २० बाले तोड़ी थीं। रमेशको अिससे कम सज़ा नहीं होगी।"

अिस प्रकार रोज़ ही रानीके घरमें गाँवकी स्त्रियाँ जमा होतीं और जेल अदालत और सज़ाकी बातें करतीं। रानी अपने पतिको देखनेके लिये, अुससे मिलनेके लिये व्याकुल हो अुठी। अुसके पास बेचनेको ज़ेवर भी नहीं थे। सिपाहीको क्या देती! वकीलको क्या देती!

अेक पड़ोसीका लड़का शहरमें पढ़ता था। अुसने रानीको मुफ़्तमें अुसके पतिका दर्शन करा देनेकी प्रतिज्ञा की और अुसे लेकर शहरको रवाना हुआ।

जेलका फाटक देखकर रानी भयसे काँप अुठी। पहरेदारोंने कहा—"अेक रुपया दो तो पतिसे भेंट करा दें।" रानी अपना सिर दे सकती थी, पर रुपया अुसके पास कहाँ था! पड़ोसीका लड़का अुसकी बेचैनीका अनुभव कर रहा था। अुसने कहा—"मेरे पास

अेक रुपया है। पिताजीने ख़र्चके लिये दिया था। पर चाची तुम अुसे सिपाहीको दे दो। मेरा काम किसी प्रकार चल जायगा।"

पति-दर्शनकी लालसाने रानीकी विवेक-शक्तिका अपहरण कर लिया। अुसने बालकसे रुपया लेकर पहरेदारको दे दिया। रमेश जेलके फाटकपर लाया गया।

विवाहके बाद आज रानीने अुसे प्रथम बार सिरसे पैर तक कपड़ा पहने हुअे देखा। घुटनों तक जाँघिया, जाँघियेके अूपर कमीज़, सिरपर टोपी। पतिको अिस वेषमें देखकर अुसे प्रसन्नता हुअी। अुसने मन-ही-मन कहा—"जहाँ भी रहो, प्रसन्न रहो।"

रमेशने कहा—"रानी! तुझमें शहर तक आनेका साहस हुआ, यह देखकर मेरे गर्वका आज ठिकाना नहीं है। मेरी चिंता मत करना। कल ६ महीनेकी सज़ा सुनायी गयी है। यह वैशाख है। अेक महीनेकी छूट मिलेगी। भादोंमें घर आ जाअूँगा।"

रानीने पूछा—"यहाँ आनेको क्या पाते हो?"

"अिसकी बात मत पूछ रानी। बड़ा सुख है। दोनों वक़्त रोटी, दाल और साग मिलता है। अमीरोंका स्वर्ग तो मैं नहीं बता सकता कि कहाँ है, पर ग़रीब किसानोंका स्वर्ग यहीं है। रामूसे, कालकासे, चौधरीसे मेरी ओरसे कह देना कि चोरीकी सज़ा स्वर्ग है। ख़ाली हाथ, ख़ाली पेट वहाँ क्या बैठे हैं? कसूर करें और यहाँ आकर कुछ दिन मेहमानी करें। मेरी पोशाक देख। अपनी सुधमें अितने कपड़े तो कभी पहने नहीं। ओढ़ने-बिछानेको कम्बल मिले हैं। रानी! तेरी फिक्र न होती तो यहीं ज़िन्दगी काट देता।"

पड़ोसीके बालकने पूछा—"यहाँ काम नहीं करना पड़ता ?"

"काम बच्चा कसकर करना पड़ता है। दिन-भर चक्की चलानी पड़ती है। बाध बटना पड़ता है। पानी खींचना पड़ता है। पर इस मेहनतके बदलेमें खराब ही सही, पेट-भर खाना तो मिलता है। और वहाँ गाँवमें क्या है ! मेहनत भी करो और भूखे भी रहो।"

फिर वह रानीसे बोला—'६ महीने ब्रह्माके दिन नहीं होते। बरसातमें घर गिरेगा। गिर जाने देना। खेती-बारीकी फिक्र करना। गरमीमें आम-गुठली, बरसातमें साग-पात खाकर गुज़र कर लेना। मैं आऊँगा तब देखा जायगा।

फाटकके सिपाहियोंने कहा—"बहुत बातें कर चुके, चलो अन्दर। रानीने अपनी बग़लसे पोटली निकाली। रमेशने पूछा—"क्या है ?" "थोड़ा-सा चना लेती आयी थी। उसको बदलकर लायी और मट्ठा ले लिया है तुम्हारे वास्ते।"

"रानी ! तू मुझे हमेशा बच्चा ही समझेगी ! ले आ।"

रमेशने पोटली ले ली।

सिपाहीने उसके हाथसे पोटली छीनकर फाटकसे दूर रास्तेमें फेंक दी। और उसके गलेमें हाथ लगाकर बोला—'बस बहुत हुआ, अन्दर चल, जेलमें बाहरका खाना नहीं लिया जाता है।"

सिपाहीकी बातकी परवा न करके रमेशने फिर कहा—"रानी ! चिन्ता मत करना; ६ महीने ब्रह्माके दिन नहीं होते।"

सिपाही ढकेलता हुआ उसे अन्दर ले गया। रानी अपना मन

मसोसकर रह गयी। हाय! यदि संसार रमेशको रानीकी दृष्टिसे देखता! यदि अदालत अुससे पूछती—"तुमने क्यों चोरी की?" यदि सरकार जेलके भीतर अुसके भोजनकी जैसी चिन्ता करती है वैसी ही जेलके बाहर भी करती!

रानीने अपनी पोटली अुठा ली। जैसे कोअी भक्त देवताको कुछ आद्य सामग्री भेंट करता है और पुजारी देवताके पाससे अुस आद्य सामग्रीको अुसे वापस कर देता है, वैसे ही प्रेमसे रानीने अुस पोटलीको अुठाया था। अुसमें अुसके पतिका हाथ लगा था। अुसने तिरस्कारका ज़रा भी अनुभव नहीं किया।

३

गाँवमें आनेपर रानी पतिके आनेके दिन गिनने लगी। चार वर्षका अुसके अेक छोटा लड़का था, जो अपनी नानीके पास रहता था। वहाँ अुसे खाने-पीनेका आराम था। रमेशकी गिरफ़्तारी और मज़ाका समाचार सुनकर अुसकी वृद्धा विधवा माँने अेक आदमी भेजकर अुसे अपने यहाँ बुलवाया पर रानीने जानेसे अिन्कार कर दिया। क्या मालूम, पति कब आयँ? तब वे कहाँ जायँगे, क्या अायँगे! अिसी चिन्ताने अुसे घर न छोड़ने दिया। रही बात अपने खाने-पहननेकी, सो अिसकी विशेष चिन्ता न थी। और फिर, अपनी माँकी भी अवस्थासे वह परिचित थी। वृद्धा पूर्वजोंकी कमाअीसे किसी प्रकार गुज़र कर रही थी। बुढ़ापेमें दिल बहलानेके लिये अुसने नातीको बुला लिया था। वही अुसपर बोझा था।

छः महीने कोअी ब्रह्मांके दिन नहीं होते। रानीने पतिके घरपर ही रहकर अुस समयको काटनेका निश्चय किया।

रमेशके आमका अेक बाग़ था, पर क़र्ज़में वह भी बिक चुका था। महाजनने अुस साल बाग़को कुँजड़ोंके हाथ बेच दिया था। कुँजड़ा अपना डेरा डालकर अुसी बाग़में पड़ा था।

वैशाखके बाद जेठ आया। जेठकी लम्बी दोपहरी काटे न कटती। जी अूबता तब रानी अुसी बाग़में चली जाती। वह अुसका बाग़ था।

बहुत-से पेड़ अुसके ससुरके लगाये हुअे थे। बिक गया था तो क्या, अुस बाग़से अुसका अेक प्रकारका पारिवारिक सम्बन्ध था। अधिकार न होते हुअे भी अुस बाग़को वह अपना समझती थी। वहाँ जानेमें वह किसी प्रकारके अपमानका अनुभव नहीं करती थी।

वह कुँजड़ेके लड़कों-बच्चोंसे अुस बाग़की कहानियाँ बताती। किस पेड़के आम कितने मीठे हैं यह बताती। किस वृक्षके फलोंका अचार अच्छा बनता है, यह बताती। अेक पेड़ अैसा भी था जिसमें भादोंमें आम पकते थे। वह पेड़ भी अुसने कुँजड़ेको बताया। कुँजड़ेने अुस पेड़से और भी लाभ अुठानेकी बात सोची।

रानी कुँजड़ेके लड़कों-बच्चोंका बातोंसे ही मन न बहलाती, बाग़से जानवरोंको भगाने और पके आम बीननेमें भी वह अुनकी यथेष्ट सहायता करती। यह सब काम वह अपना ही समझकर करती, और करती क्यों न! बाग़ अुसीका था, अुसपर अुसका अधिकार भले ही न रह गया हो। फिर महाजन अुसे दाम मिल जानेपर लौटानेको तैयार भी था। अुसके दिलमें यह भी आशा थी कि कभी पासमें पैसे होंगे तो बाग़ अुसे फिर वापस मिल जायगा।

शामको चलने लगती तब कुँजड़िन अुसे किसी दिन चार, किसी दिन पाँच, किसी दिन दस आम तक मुफ़्तमें दे देती। वे ही आम अुसके जीवनके आधार थे। अिन आमोंको वह स्वादुके लिये नहीं, जीवित रहनेको पतिका दर्शन करनेके लिये आती थी। पर अेक दिनके आम सदैव दूसरे दिन आती थी। क्या मालूम, सरकारको दया आ जाय और वह अुसके पतिको छोड़ दे! अिसी आशासे प्रति दिन ताज़े आम पतिके लिये रख छोड़ती थी। रातको वह बिस्तरपर लेटी-लेटी पतिके आनेकी आहट लिया करती। ज़रा भी किसीकी आहट पाती तो चौंककर अुठ बैठती। आँगनमें निकलकर द्वार तक आती। चारों ओर आँखें फाड़-फाड़कर देखती और फिर निराश होकर लौट जाती।

अुसके दरवाज़ेपर नीमका पेड़ था। अुसकी सघन छायामें पड़ोसी दोपहरीमें बैठा करते थे। अुनकी ख़ातिर करनेके लिये अुसके घरमें पान-सुपारी न थी। पर घरमें अेक घड़ा ठंडा पानी वह भरकर रख जाती और पड़ोसीके लड़कोंसे कह जाती कि कोअी पानी माँगे तो अपने घरसे लोटा लाकर पिला देना।

अुसके घरमें घुसनेकी किसीको मनाही नहीं थी। चौपालमें घुसनेपर अेक पुराना किवाड़ दरवाज़ेमें लगा मिलता था। अिस साल रमेशके सामने ही किसीने अुसे अुखाड़कर होलीमें डाल दिया था। तब रेंड़की लकड़ीका अेक टट्टर किवाड़की जगह लगाया गया था, जिसे रानीने स्वयं लड़कोंकी सहायतासे बनाया था। अेक खाट थी जो दिनको बाहर नीमके पेड़के नीचे गाँव वालोंके बैठनेके लिये पड़ी रहती थी और रातमें अुसके सोनेके लिये आँगनमें आ जाती।

गाँव वालोंमें से किसीने यह सोचनेका कष्ट न किया कि रानी क्या आकर जीती है ? अन्होंने समझा था, रमेश ज़रूर कुछ घरमें रख गया होगा । जब चोरीमें पकड़ा गया है तब ज़रूर अुसने पहले भी कुछ चुराया होगा । कौन जाने, घरमें कुछ नग़दी रुपये भी कहीं गड़े हों ? अिसलिये रानीपर क्या बीत रही है, अिसपर किसीने कभी ध्यान नहीं दिया ।

जेठ बीता, आषाढ़ आया । अेत और रास्ते हरियाली से ढँक गये । अुसने सोचा, शायद सरकार जोताअी, बुवाअीका आरम्भ समझकर अुसके पतिको छुट्टी दे दे । वह और भी अुत्सुकतासे पतिके आनेकी बाट देखने लगी ।

गाँवमें सबके घर छाये गये । पर रानीका घर बिना मरम्मत ही रह गया और बरसातमें ढहने लगा ।

बेचारी अबला हल-बैलका भी अिन्तज़ाम न कर सकी । अुसके भी अेत ज़मींदारने दूसरोंके हवाले कर दिये । हल-फाल दुरुस्त कराता, कोअी अेतोंमें खाद फेंकने ले जाता, कोअी बैलोंके लिये घास काटकर लाता, पर रानीके पास कोअी काम नहीं था । वह अपने द्वारपर बैठी निराशा-भरे नेत्रोंसे सबको काम करते देखती हुअी पतिके आनेकी बाट जोहती रहती ।

चूल्हा अुसी दिनसे नहीं जला था जिस दिन रमेश पकड़ा गया था । घरमें कुछ था तो नहीं जो पकाती और यदि कुछ होता ही भी शायद अुससे पकाया नहीं जाता । अकेले अपने लिये अुसने कभी खाना नहीं पकाया था । अिस प्रकार वह दिन-दिन दुबली और बलहीन होती

गयी। जब चलती तब अुसके पैर लड़अड़ाते। आमोंकी गुठलियाँ अुसने घरके अेक कोनेमें जमा कर रखी थीं। जब क्षुधा बहुत बेचैन करती तब दो-चार गुठलियाँ तोड़कर खाती और दो लोटा पानी पी लेती। घरके आँगनमें पड़ोसिनके यहाँसे बीज लाकर अुसने ककड़ी बो दी थी। वही अुसकी खेती थी। शेष जीवनका वे ही अवलम्ब थीं। वह अपने मनमें कहा करती—"जब तक वे आयँगे, ककड़ियाँ ज़रूर तैयार हो जायँगी। दस-पाँच दिन आरामसे खायँगे फिर देखा जायगा। खेतोंमें दाना पड़ ही गया है, मेहनत-मज़दूरी मिल ही जायगी।"

अब अुसके लिये द्वारसे अुठना भी मुश्किल हो गया। चौपालमें भी झाड़ू लगाती तो हाँफ अुठती। अेक दिनका पानी कभी दिन पीती। जान पड़ता था, मानो अुसके प्राण अब केवल पतिका दर्शन करनेके लिये ही अटके हुअे हैं। पर नर-कंकालोंकी अुस बस्तीमें रानीको अिस प्रकार मौतसे युद्ध करते हुअे देखकर भी किसीने अुसके जीका हाल न पूछा।

गिनते-गिनते आख़िर वह दिन भी आ गया। गाँवके लड़कोंने आकर ख़बर दी कि रमेश आ रहा है। रानीके शरीरमें अेकाअेक न जाने कहाँसे शक्ति आ गयी। पतिको अुसका वेष देखकर दुःख न हो, अिसलिये अुसने पानी लगा बालोंमें कघी की। विवाहके समयकी अेक साड़ी जिसे कहीं-कहीं झींगुरोंने काट डाला था, पहन ली और माँगमें सिन्दूर लगाकर आँगनमें अिधर-अुधर घूमने लगी। वह पतिको खिलानेके लिये मुलायम-मुलायम ककड़ियाँ तोड़ने लगी। अेकाअेक रमेशने बाहरसे ही आवाज़ दी—"रानी! मैं आ गया।"

रानी दौड़कर अुसके पैरोंसे जाकर लिपट गयी, पर रो न सकी। आज प्रसन्नताकी भावनामें वह हृदयकी सारी वेदनाको अेकदम निकालकर हृदयके बाहर फेंक देना चाहती थी। अुसकी घिग्घी बँध गयी, वह कुछ बोल न सकी।

रमेशने अुसे अुठानेकी कोशिश की। पर अरे! यह क्या! वह अुठती क्यों नहीं? गाँवके अेक बूढ़े व्यक्तिने कहा—"अुसके शरीरमें प्राण भी हैं जो अुठे?" रमेशने ज़ोरसे पुकारा— 'रानी! रानी! अब तू भी मुझे अिस विपत्तिमें अकेला छोड़ देगी?"

पर रानीने कोअी अुत्तर नहीं दिया। अुसके रक्त-माससे हीन मूक चेहरेपर अेक विचित्र प्रकारकी प्रसन्नता खेल रही थी—"प्यारे! तुम मर्द हो। मैं न रहूँगी तो तुम्हें कमानेकी बहुत चिन्ता भी न रहेगी। और जब किसी प्रकार पेट न भरेगा तब अपने अुसी ग़रीबोंके स्वर्गमें चले जाओगे।"

वह अेकमात्र अपने पतिके दर्शनके लिये जीवित थी। आज वह अिच्छा पूर्ण हो गयी। शायद अिसीलिये प्राण भी निकल गये।

रमेशने अुसे धीरेसे ज़मीनपर लिटा दिया। अुसके अंचलसे मुलायम ककड़ीकी बतियाँ ज़मीनपर गिर पड़ीं। यह अन्तिम अुपहार था, जो अुसने अपने देवताके चरणोंमें भेंट किया था।

कष्टका प्रतिदान

रामनारायणको स्टेशनपर गाड़ीके लिये प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। वे और गाड़ी अेक ही साथ प्लेटफार्मपर पहुँचे।

कुलीने शिशु-पुत्रको गोदमें लिये अुनकी पत्नी गोमती और अुन्हें असबाबके साथ ही भीतर डब्बेमें ढकेल दिया। जिस तरह कपड़ोंसे अूपर तक भरे हुअे टीनके ट्रंकमें तह किया हुआ अेकाध कपड़ा रखकर आसानीसे ढक्कन लगा दिया जा सकता है, अुसी तरह रेलके भरे हुअे थर्ड क्लासके डिब्बेमें जब चाहे तब चार-छः आदमी ठूँसे जा सकते हैं। गोमतीको बेंचपर बिठाकर, रामनारायणको अपने लिये जगह निकालनेमें बहुत दिक़्क़त नहीं हुअी। वे बैठे, और सीटी देकर गाड़ी चल दी। मानो वह अुन्हींके बैठनेके अिन्तज़ारमें खड़ी थी।

पत्नीको साथ लेकर रामनारायणकी यह पहली ही यात्रा थी। घरमें बड़ोंके बीचमें अपना आनन्द-मिलन अुन्हें ओटके भीतर संकुचित सीमामें बँधा-बँधा सा प्रतीत होता था, अिसलिये आज घरसे बाहर होते हुअे भी वे प्रसन्न-वदन थे। बीच-बीचमें अिस प्रसन्नतापर अपने-आप लज्जित होकर अुसे वे दबा देना चाहते थे, परन्तु कृतकार्य न होते थे। चलती हुअी पिचकारीके अूपरी रन्ध्रको सहसा हथेलीसे दबा देनेपर जिस तरह अिधर-अुधरकी अनजान सन्धियोंमेंसे जल ज़ोरके साथ निकल पड़ता है, अुसी तरह आज-ज़रा ज़रा-सी बातपर अुनका आनन्द फूटा पड़ता था। जिन लोगोंने बैठनेके लिये अुन्हें थोड़ी-सी

जगह दी थी अुनकी यह साधारण शिष्टता आज अुन्हें बहुत अधिक जान पड़ी। "आपको कष्ट तो नहीं हो रहा!" कहकर शीघ्र ही अुन्होंने मधुरालापका रंग जमा दिया

गोमतीके लिये भी यह यात्रा कम आनन्दकी न थी। चारों ओर आदमी-ही-आदमी होनेपर भी अिस समय स्वामीको वह अपने निकटतर अनुभव कर रही थी। अुसका शरीर आनंदसे कण्टकित था। मानो स्वामीके साथ मुक्त आकाशमें वायुयानपर बैठकर वह बिहार करने जा रही थी

रामनारायण लोगोंके साथ बात कर रहे थे। गोमतीने अिड़कीकी ओर मुँह करके बाहरकी ओर देखा। गाड़ी बनके बीचमें होकर जा रही थी। जगह अूबड़-खाबड़, नीची-अूँची थी। वृक्ष पास-पास न थे, फिर भी जान पड़ता था कि सब अेक दूसरेका आलिंगन कर रहे हैं। वनकी समस्त शोभा और सौंदर्य मानो अुसीकी ओर दौड़े आ रहे थे। बीच-बीचमें खेतोंपर काम करते हुअे नर-नारी अुत्सुक दृष्टिसे गाड़ीकी ओर देखते हुअे दिखाअी देते। नया न होनेपर भी आज यह सब अुसके लिये नयेसे अधिक था। अेक जगह घोड़ेके पीछे-पीछे अुसका बच्चा जा रहा था। अितना छोटा 'घोड़ा' अुसने पहले कभी न देखा था। शिशुका मुँह अुस ओर करके अपने धीरेसे कहा—'देख, वह तेरा घोड़ा!" छोटा घोड़ा और अुसके छोटे-से सवारकी कल्पना करके वह हँस पड़ी।

गाड़ी कितनें ही स्टेशनोंपर रुककर सवारियोंको चढ़ाती-अुतारती हुअी आगे बढ़ी जा रही थी। यात्रियोंमें देशकी समस्याओंपर गम्भीर

विचार हो रहे थे। न जाने कितने प्रस्ताव-अुपप्रस्ताव अुपस्थित, किये जा चुके थे, कितने ही नेताओंपर पुष्पवृष्टि हो चुकी थी और कितनों ही की नेतागिरीकी सनद ज़ब्त। स्वराज्य-आन्दोलनके सम्बंधमें वाद-विवादका रूप अुग्र हो अुठा। स्वराज्यका विरोध जिस तेज़ीसे हो रहा था, अुसे देखकर रामनाराणको आनन्दित ही होना चाहिये था। देशके भीतर अितना ओज और अुत्साह संचित है, फिर निराशाका काम क्या? पर वे अुस अुत्साह और ओजको परास्त करनेमें जुटे थे।

धीरे-धीरे धीमी पड़कर गाड़ी अेक छोटे स्टेशनपर रुक गयी। गाड़ीकी घड़घड़ाहट यात्रियोंके वाग्युद्धमें मारू बाजेका काम कर रही थी। अुसके बंद होते ही तर्क और युक्तियोंके शस्त्र जहाँके तहाँ छोड़कर लोग प्लेटफॉर्मपर दृष्टि डालने लगे। अिस स्टेशनपर चढ़नेवाले यात्रियोंकी संख्या अधिक थी। अर्थात्, व्ययकी अपेक्षा आयका परिमाण बहुत था। यात्रिजन गठरी-पोटली लिये बदहवास होकर अिस डिब्बेसे अुस डिब्बेकी ओर दौड़ रहे थे। गाड़ीके लोग अपने-अपने दरवाज़ेपर डटकर बाहरवालोंके अिस प्रचंड आक्रमणका वीरतासे सामना करने लगे। बाहरवाले अनुनय-विनयसे थककर ज़ोर-ज़बरदस्ती पर आ पहुँचे। विजय अंतमें अुन्हींके दृढ़ निश्चय की हुअी। डाँट-फटकार और घुड़कीकी बौछारमें निर्भयताके साथ वे लोग गाड़ीपर सवार हो ही गये।

जिस समय यह संग्राम चल रहा था, रामनारायणने विपक्षके अेक दलकी सहायता भीतर आनेमें की थी। जयचंदके कार्यकी अिस पुनरावृत्तिसे कुछ लोग अुनपर बेहद बिगड़ अुठे। अेकने कहा—

"बस, हो चुका। अधिक देशभक्तिकी ज़रूरत नहीं है। अब दरवाज़ा बंद कीजिये।"

रामनारायणने कहा—"यात्रामें कष्ट होता ही है; थोड़ा-सा दूसरेके लिये भी सही। कुछ समयकी बात है, फिर तो सबको अपने-अपने लिये दरवाज़ा ओलना है।"

"उदारता दिखाना है तो अपने घर ले जाकर दिखाइये। अिस तरह यहाँ आप दूसरेका दम नहीं घोंट सकते।"

"अच्छा, यह लीजिये।"—कहकर दरवाज़ा बंद करते हुअे रामनारायणने अेक स्त्रीका हाथ पकड़कर अुसे और चढ़ आने दिया। सबके विरुध काम करनेके कारण गोमती मन ही मन पतिपर झीझ रही थी। भारतीयोंमें अैक्य न होनेका प्रत्यक्ष अुदाहरण अुसके सामने था। वह सोच रही थी—'दस आदमियोंमें मिलकर घण्टे-भर बैठ सकते नहीं और कहते हैं—'यह लेंगे, वह लेंगे'।"

युद्धका अन्त हो जानेपर भी अशान्ति-कोलाहल तुरन्त नहीं थमता। डिब्बेमें गड़बड़ मची हुअी थी। अैसेमें रामनारायणने सहसा सुना—"अरे, मेरा लोटा!"

यह स्त्री वही थी, जिसे रामनारायणने अभी-अभी चढ़ाया था। अुसके चेहरेपर हवाअी अुड़ रही थी। राजाको अपने राज-पाट जानेका भी अितना दुःख न होगा, अितना अुसे अपना लोटा छूट जानेका हो रहा था। अुसने दरवाज़ेकी ओर बढ़नेकी चेष्टा करते हुअे कहा—"भैया, मुझे अुतर जाने दो, मेरा लोटा बाहर छूट गया है।"

रामनारायणने दरवाज़ेकी झिड़कीसे मुँह निकालकर बाहर देखा, पानीके नलके पास अेक जगह अुसका लोटा रखा हुआ था। स्त्रीको अुतारनेके लिये रामनारायण दरवाज़ेकी ओर बढ़े। लोगोंने समझा, अब और किसीको चढ़ाया चाहते हैं। अेक साथ कअी कण्ठोंसे सुनाअी दिया—"मत खोलो, दरवाज़ा मत खोलो।"

रामनारायणने सोचा—"नीचे अतरकर यह फिर भीतर न आ सकेगी, मैं ही क्यों न अिसका लोटा अुठा लाअूँ।" पर नीची श्रेणीके आदमीयोंके काम करनेका अभ्यास अुन्हें न था, अिसलिये मनमें आया कि हाथ-मुँह धोकर पानी भी तो पीना है। समस्याके समाधानसे अुनके मुखपर चमक आ गयी। अुससे कहा—"ठहरो, मुझे पानीके लिये जाना है। लोटा मैं ही लेता आअूँगा।"—कहकर वे तेज़ीसे अुतर गये।

रामनारायण सीधे नलके पास जा खड़े हुअे। जो विचार हमारे भीतर अुठते हैं, वे अपनी मर्ज़ीका काम हमारे द्वारा कब करा लेते हैं, यह बात बहुधा हमें मालूम भी नहीं होने पाती। लोटा अुठानेकी प्रधान बात अुन्हें भूल गयी। बहानेकी ही बातने अुन्हें अपनी ओर खींच लिया। अुस समय नलपर दूसरा कोअी न था। बिना बाधाके हाथ-पैर धोकर आँखोंमें छींटे दिये और कुल्ले करने लगे।

अेकाअेक गाड़ीकी सीटी सुनकर अुनकी नींद-सी खुली। लोटा अुठाकर गाड़ीकी ओर दौड़े, अुनका डिब्बा निकट न था। दौड़ते-दौड़ते अुन्होंने देखा—गाड़ी किसी बड़े अजगरकी भाँति रेंग रही थी। अब अुन्हें पीछा करते देखकर भयंकर भक-भकके साथ तेज़ हो अुठी।

रामनारायण जल्दीमें भूल गये, अुनका डिब्बा कौन है। बाहरकी छड़ पकड़कर अेक डिब्बेके पैरदानपर अड़े हो गये। भीतर कुछ सिपाही थे, अुनका फौजी हुँकार सुनकर अुन्हें अपनी भूल मालूम हुअी। नीचे अुतरकर वे फिर अपने डिब्बेकी ओर दौड़े। गाड़ी तब तक अपनी अलस-मन्थरता छोड़ चुकी थी। अचानक पीछेसे अेक जमादारने अुनका हाथ पकड़कर कहा—"बाबू, चलती गाड़ीमें चढ़नेका हुक्म नहीं है।"

प्रयत्न करके भी रामनारायण अुसके हाथसे न छूट सके। अुन्होंने देखा—गाड़ी भक-भक करती हुअी प्लेटफॉर्म पार कर गयी। दूर तक रेलकी पटड़ी दिखाअी देती थी। वृक्ष-श्रेणियोंके बीचमें बने हुअे लौह-पथपर गाड़ी दौड़ने लगी। अुन्हें जान पड़ा, किसीने अुनका हृदय काटकर दो टुकड़े कर दिया है और मानो अुन्हींके अूपर अपना प्रलय-चक्र चलाती हुअी गाड़ी दौड़ी जा रही है। भयंकर आँधी जिस तरह पीछे मुड़कर यह नहीं देखती कि कौन-सी लता टूटी और कौन-सा पेड़ अुखड़ा, अुसी तरह घड़घड़ाती हुअी गाड़ीको भी पीछे देखनेका अवकाश नहीं था! रामनारायण अपनेको सँभाल न सकनेके कारण वहीं मुरम बिछी हुअी धरतीपर धम-से बैठ गये।

जब कोअी भारी चोट लगाती है, तब कुछ देरके लिये चेतना लुप्त हो जाती है, मानो अुतनेमें वह जड़-कठोर होनेका अभ्यास करती है। अुस अभ्यासके द्वारा जो कुछ प्राप्त होता है, यदि वह न हो तो कदाचित् चोटके कारण बचना कठिन हो जाय रामनारायणको पहले मालूम हुआ कि धरती पैरोंके नीचेसे खिसक रही है। मानो दौड़कर रेलका पीछा करेगी! बादमें अुन्हें यह याद न रहा कि वे कहाँ

हैं बाहरवालोंकी दृष्टिमें यद्यपि वे अचेत नहीं हुअे थे, परन्तु कअी क्षण किस तरह निकल गये, अिसका ज्ञान न हो सका

अुस क्षणिक तन्द्राके अनन्तर वे चौंक-से पड़े। अुन्हें जान पड़ा कि वे नींदमें झँप गये थे। गाड़ीकी आवाज़ अब भी अुनके कान तक पहुँच रही थी। अुनकी मूर्छाताका काला कलंक भिंजनके धुअेंके रूपमें वहींके आकाशमें अभी फल ही रहा था, फिर भी अुन्हें जान पड़ा कि अुन्होंने बहुत बिलम्ब कर दिया है। दुर्दान्त दस्यु देखते-देखते अुनका सर्वस्व छीनकर ले गया और वे निरीह पथिककी भाँति अड़े-अड़े देखते रहे। न विरोध किया, न पीछा ही।

अब जमादारके अूपर रोष-भरी दृष्टि डालकर अुन्होंने कहा—'क्यों जी, तुमने हमें क्यों रोका? गाड़ीमें मेरी स्त्री और बच्चा था।"

सब हाल सुनकर जमादार भेद प्रकट करने लगा। बोला—"मुझे क्या मालूम था कि अैसी बात है बाबू! अभी अुस दिन अिसी तरह अेक आदमी बिना टिकट गाड़ीपर चढ़ रहा था कि पैर फिसल पड़ा। सारा तन लोहू-लुहान हो गया और आगेके दो दाँत टूट गये। अिसीसे कुछ सख्ती करनी पड़ती है। न करें तो नौकरीसे निकाल दिये जायँ। अब पहलेके-से रहमदिल अफ़सर कहाँ है! अेक वाल्टन साहब थे।" वाल्टन साहबकी कीर्ति-कथाअें सुननेका अवकाश अुन्हें न था।

अगला स्टेशन बारह मील दूर था। स्टेशनवालोंकी सलाहसे रामनारायणने वहाँ तक पैदल जानेका निश्चय किया। दूसरी गाड़ीके आनेमें अभी आठ घण्टेकी देर थी आगेके स्टेशन-मास्टरको अेक

तार गोमतीको अुतारनेके लिये देकर, रेलकी पटड़ीके बग़लके मार्गसे वे चल पड़े ।

सूर्य अस्त हो गया था । अँधेरी रातका सायंकाल था । शीघ्र ही घने अन्धकारकी सम्भावना थी और स्थान अपरिचित, फिर भी वे पूरे वेगसे चलने लगे ।

अुनके हृदयमें बिच्छूके डंककी-सी वेदना हो रही थी । 'हाय बेचारी गोमतीका क्या हाल होगा ? वह कभी घरकी देहलीके बाहर नहीं हुअी और मैंने आज अुसे अपरिचितोंके बीच छोड़ दिया मैंने कहा था— 'साथमें अेक आदमी लिये जाओ ' मैंने नहीं माना । अब जब अुनके पास मेरी अिस मूर्खताका समाचार पहुँचेगा तब वे क्या कहेंगे डिब्बेमें ? अकेली छूटकर गोमती ही क्या कहती होगी ? यात्रियोंको मैंने कितनी ही नयी बातें सुनायीं । अब वही कितना व्यंग-विद्रूप कर रहे होंगे ! कह रहे होंगे — "अपनी सँभाल तो अपनेसे बनती नहीं, दूसरेकी करने चले थे ।" यद्यपि चारों ओर सन्नाटा था, झींगुरोंकी निरन्तर झंकारमें संसारके सारे स्वर विलीन-से थे, फिर भी अुनके कानोंमें अुस डिब्बेके यात्रियोंका प्रचंड हास स्पष्टतः प्रवेश कर रहा था ! अुन्होंने फिर सोचा — "कहीं गोमती वहाँ न मिली किसी गुंडेके चक्रमें पड़ गयी तो...." वे अेकदम अवसन्न पड़ गये । पैर अेक अेक मनके भारी हो अुठे । फिर और कुछ अुनसे सोचा न जा सका । बैठे हुअे हृदयके साथ वे वहीं अेक जगह बैठ गये ।

चारों ओर निर्जन वन था । अूपर आकाशमें तारे टिमटिमा रहे थे । अुनके प्रकाशमें अितना ही दिखायी दे रहा था कि चारों ओर अंधकार है, और कुछ नहीं । थोड़ी देर बाद अुन्होंने फिर कहींसे बल

अिकट्ठा किया। अुस अूबड़-खाबड़ पथके प्रस्तर-अण्डोंपर पैर रखते हुअे, अुन्हीं जैसे कठोर बनकर वे फिर चलने लगे।

लगभग आधी रातके समय रामनारायण अुस स्टेशनपर पहुँचे। सीधे मुसाफिरखानेमें चले गये। वहाँ यात्रिगण कुछ लेटे और कुछ बैठे-बैठे किसी विषयपर मनोयोगसे बातचीत कर रहे थे। अेक आदमीसे पूछा तो मालूम हुआ, अुन्होंने जिस गाड़ीमें गोमतीको छोड़ा था, वह तीन-चार स्टेशन आगे दयालपुरके पास अेक मालगाड़ीसे भिड़ गयी है। दो डिब्बे चकनाचूर हो गये हैं और सैकड़ों आदमी हताहत। अिस समाचारको सुनकर वे जहाँ-के-तहाँ, जैसे-के-तैसे खड़े रह गये। मुसाफिरखानेमें अुन्हें गोमती नहीं दिखायी दी। फिर भी अुन्होंने अपनेको सँभालकर दो-तीन बार वहाँ फिर देखा। यदि छोटीसी सुअी होती, तो वह अुनकी तीखी दृष्टिसे अगोचर न रहती, परंतु वह तो गोमती थी। अुन्हें वहाँ अुसका पता न चला।

अिस तरह बानरी मरे हुअे बच्चेको भी छातीसे चिपकाये रहती है, अैसी तरह मनुष्य नष्ट हुअी आशाको भी नहीं छोड़ना चाहता। यद्यपि रामनारायणके मनमें निराशाने पूरा अधिकार जमा लिया था, फिर भी गोमतीको देखनेके लिये वे अिधर-अुधर चक्कर काटने लगे। प्लेटफार्मकी लालटेनें बुझी हुअी थीं। स्टेशन-मास्टरके आफिसमें अेक लैम्प मन्द-मन्द प्रकाश कर रहा था। भरे बोरोंकी अेक थापपर स्टेशनके दो निम्न कर्मचारी लेटे हुअे थे। ड्यूटीपर असिस्टेन्ट स्टेशन-मास्टर थे। वे अेक आराम कुर्सीपर सोनेके ढंगसे लेटे हुअे थे। हाथकी छोटी लालटेन बगलमें रक्खे हुअे अेक जमादार बैठा-बैठा

निद्रा लेनेका अभ्यास कर रहा था। रामनारायणके पैरकी आहटसे वह चौंका। अुसने हाथके अिशारेसे रामनारायणको बुलाया। बोला—"तुम यहाँ भीतर कैसे चले आये? जाओ, बाहर मुसाफिरखानेमें!"

अुसके अफ़सर लोग जिस भाव-भंगीके साथ अुससे बात किया करते थे, जमादारने अुसे अच्छी तरह सीख लिया था। बल्कि कहना यह चाहिये कि अिस विषयमें वह अपने गुरुओंसे भी योग्य था। अुसके अैसे बोलचालसे चिढ़कर रामनारायणने कहा—"हमें स्टेशन-मास्टरसे बहुत ज़रूरी काम है।"

धीरे स्वरमें जितना भी ज़ोर भरना संभव है, अुतना भरकर जमादारने कहा—"बाबू सो रहे हैं। देखो, अुधर मत जाओ, नहीं तो अच्छा न होगा। रातको कोअी काम नहीं होता।"

अिस समय किसीसे लड़ाअी मोल लेने योग्य रामनारायणके मनकी अवस्था न थी। नरमीसे अुन्होंने कहा—"शामकी पैसेन्जर गाड़ीसे अिस स्टेशनपर कोअी स्त्री तो नहीं अुतरी?"

"नहीं अुतरी।"

"नहीं अुतरी?"

"हाँ, नहीं अुतरी, नहीं अुतरी। ज़्यादा शोर न करो, छोटे बाबू जाग जायँगे?"

कुछ सोचकर अेकाअेक तेज़ीके साथ वे स्टेशन-मास्टरके दफ़्तरमें घुस गये। कुर्सीके पास अड़े होकर ज़ोरसे बोले—"बाबू साहब! बाबू साहब!"

बाबूने आँखें खोलकर जिस तरह देखा, मानो वे लेटे ही थे, सोते न थे। परिचितकी तरह रामनारायणकी ओर देखकर मुस्कराते हुये उन्होंने कहा—"अच्छा, आप आ गये! आपका तार तो आ गया था, परन्तु आपने डिब्बेका नम्बर नहीं लिखा था।"

बाबूके मुँहपर समवेदना या दुःखका कोई चिन्ह न देखकर रामनारायणका पित्त बिगड़ उठा। बोले—"क्या यह सोचकर गाड़ीमें सवार हुआ था कि ऐसी घटना हो जायगी, जो गाड़ीका नम्बर देखकर याद रखता? आप लोग यदि हरामका ही न खाना चाहें तो बिना नम्बरके भी सब कुछ कर सकते थे।"

खामोशीसे बोलिये। हमलोग आपके मातहत नहीं है। ग़लती करते हैं आप, दोष मढ़ते हैं हमारे मत्थे!"

इसी समय बाहरसे आवाज़ आयी—"अरे बाबू आ गये!"

रामनारायणने देखा—वही स्त्री है जिसका लोटा लेने जाकर इस विपत्तिमें फँसना पड़ा है। वह पास आकर बोला—"चलिये बाबू, बहूजीके पास चलिये। वे आपके लिये घबरा रही हैं!"

रामनारायण मारे आनन्दके उछल पड़े। बोले—उन्हें उतार लिया था! कहाँ हैं?"

"बड़े बाबूकी कोठी (क्वार्टर) में हैं। बड़ा अच्छा हुआ बाबू, जो तुम गाड़ीपर नहीं चढ़ सके। वह गाड़ी तो बाबू, दो-तीन स्टेशन आगे जाकर मालगाड़ीसे लड़ गयी। बच गये बाबू, बच गये! भगवान मालिक हैं—"

अब छोटे बाबू हँस पड़े। बोले—"अिसने अितनी जल्द समाचार सुनाकर सब गड़बड़ कर दिया। नहा तो आज मीठा मुँह कराये बिना अिन्हें नहीं छोड़ता। ख़ैर, मालूम तो भले आदमी होते हैं। अपना अृण बिना चुकाये न रहेंगे।"

रामनारायणने कृतज्ञतासे झुककर कहा—"बाबू साहब, आजका अृण तो मैं अपना सर्वस्व देकर भी नहीं चुका सकता। अिस छोटेको ही देखिये। अिसे अूपर तक मोहरोंसे भर दूँ तो भी अिसका पूरा मूल्य नहीं चुक सकता।"

छोटे बाबूसे छुट्टी पाकर अुस खाके साथ रामनारायणने स्टेशन मास्टरके क्वार्टरमें गोमतीको देखा। अुसकी आँखोंसे टप टप बूँदें टपकने लगी थीं।

मिलाप

सन् १८५७ के ग़दरके बाद जब फिरसे अँग्रेज़ी राज शुरू हुआ तो जहाँ बहुत-से ख़ानदान बरबाद हुअे, वहाँ बहुत-से बन भी गये। अिन नये ख़ानदानोंमें ठाकुर लछमनसिंहका ख़ानदान भी था। यह ग़दरके समय साधारण सिपाहीसे तरक्की करके रिसालदार हो गये थे। भले नौकरकी तरह नमकका हक़ अदा किया और सैकड़ों मोर्चोंमें गोरोंपरसे अपनेको काले दानेकी तरह न्योछावर किया। मलका

विक्टोरियाकी सरकारने अुनकी वफ़ादारीकी क़द्र की और तीन पूरे गाँव और कुछ हिस्से महमूदपुरमें अिनाम दिये। अुन्होंने सरकारकी जान-मालको दुआ दी, तलवारका क़ब्ज़ा हाथसे छूटा और हलकी मूठ हाथमें आ गयी।

महमूदपुर लछपतसिंहके गाँवके बग़ल ही में था। यहाँके पुराने ज़मीदार मीर ज़मीर हुसेन बड़ी आन-बानके आदमी थे। ग़दरके पहले क़रीब-क़रीब सारा ज़िला अिन्हींका था। लेकिन ग़दरमें यह चुपके बैठे रहे और न अिन्होंने बाग़ियोंका साथ दिया, न कम्पनीका। जब बाग़ी भगा दिये गये और अुनके हमदर्दोंकी खोज हुअी तो यह भी शककी नज़रसे देखे गये। कलक्टर साहबने कहा—"अितना बड़ा ज़मींदार और यों ही बैठा रहे, नामुमकिन है।" वकीलों-मुख़्तारोंने बहुत समझाया, लेकिन मीर ज़मीन हुसैन ख़ुद न गये और न कोअी ख़ास सफ़ाअी दी। आधी जायजाद ज़ब्त कर ली गयी। यह अुसीका अेक हिस्सा था जो लछपतसिंहको मिला था।

अब लछपतसिंहसे अिनकी कैसे बन सकती थी? यह पुराने वह नया, यह ख़ानदानी वह आप बना हुआ। झगड़े हुअे और बुरी तरह। महमूदपुर, जिसमें दोनोंका हिस्सा था, पानीपतका मैदान बना और पृथ्वीराज और महमूद ग़ज़नवीकी लड़ाअियाँ फिरसे छोटे पैमानेपर होने लगीं। साथके अुठने-बैठनेवाले दोनों तरफ़ आग लगानेमें अेक-से। जीत किसीकी हो, हार किसीकी, गीदड़ सदा फ़ायदे ही में रहते हैं।

अिसलिये कभी फ़ौजदारीकी नौबत आयी तो कभी दीवानीकी। कभी मीर साहब हारे तो कभी ठाकुर साहबलेकिन। आपसमें न

समझौता हुआ, न दोस्ती, और होती कैसे? अधरवाले कहते—"सैयद कभी ठाकूरसे दबा है!" अुधरवाले जवाब देते—"राजपूत कभी किसी तुर्कसे डरा है!"

ग़रज़ जब तक दोनों बूढ़े जीते रहे, यो ही झगड़े जारी रहे। जब मरे तो खानदानी झगड़े आपसके सैकड़ों मुक़दमोंके साथ-साथ बेटोंके लिये विरासत छोड़ गये।

२

नये मीर साहब और नये ठाकुर साहब दोनों अपने-अपने बापके बेटे थे। वह बूढ़े थे यह जवान, अुनके अूनमें ठण्डक थी अिनके यहाँ गर्मी। अुन्होंने अुद फ़ौज़दारियोंमें हिस्सा न लिया, झगड़ेकी जगहों पर आप कभी न गये। यह दोनों हर जगह आप पहुँच जाते। हर झगड़ेमें अुद हिस्सा लेते। अितना ही नहीं, बल्कि शरीरमें ताक़त और दिलमें हिम्मत होनेके कारण बड़े-बड़े मज़मोंमें बेधड़क घुस जाते और अेक दूसरेको ठोककर दो-दो हाथ लड़नेको तैयार रहते।

अेक दिन अैसा संजोग हुआ कि नये मीर साहब, मीर क़ादिर हुसैनके अेक खेतमें कुअेंसे 'पुर' के ज़रिये पानी पहुँचाया जा रहा था। नालियाँ जिन खेतोंसे होकर जाती थीं, वह नये ठाकुर साहब धनपतसिंहके थे। धनपतसिंहको जो यह मालूम हुआ तो अुन्होंने नालियाँ अपने खेतमें चुपकेसे कटवा दीं। पानी मीर साहबके खेतमें पहुँचनेकी जगह ठाकुर साहबके खेतमें भर आया। मीर साहबके आदमियोंने जो यह देखा तो नाली बन्द करने पहुँचे। धनपतसिंहके आदमी लाठी लेकर अड़े हो गये कि अगर तुमने हमारे खेतमें पाँव रक्खा

तो हम सर तोड़ देंगे ! नाली काटी अिस तरह गयी थी कि बिना खेतमें गये बन्द नहीं हो सकती थी। मीरसाहबके आदमी अजीब कशमकशमें थे। नाली बन्द नहीं हो सकती, पानी रुक नहीं सकता। जोश बढ़ा, बात बढ़ी, लाठियाँ अुठ गयीं, लेकिन मीरसाहबके अेक बूढ़े नौकरने आगे बढ़कर सबको रोका। मालिककी अिजाज़त ज़रूरी थी। 'पुर' बन्द कर दिया गया। पानी रुक गया। मीरसाहबको ख़बर देनेके लिये आदमी दौड़ाया गया। पता लगा कि वह शहर गये हैं। अिधर धनपतसिंहको ख़बर हुअी। वह ख़ुद मौक़ेपर आ पहुँचे और खेतकी मेंढ़पर आकर बैठ गये कि देखें कौन हमारे खेतमें आता है।

हो सकता था कि अुस दिन बात न बढ़ती, लेकिन मौतके मारे मीरसाहबके नये मुख़्तार आ गये। अुन्हें अपनी क़ानूनदानीपर नाज़ था और कारगुज़ारीपर बड़ा दावा। सोचा कि मीरसाहबको जहाँ मालूम हुआ कि खेतमें पानी न जा सका और धनपतसिंहने रोक दिया तो पूछेंगे—"तुम ज़िन्दा कैसे हो ? मर गये होते !" आते ही ठाकुरसाहबसे बोले—"आप अपनी ठकुराअी तो तह कर रखिये, पानी जायगा और ज़रूर जायगा।"

ठाकुर तो छोटे आदमीको मुँह न लगानेके ख़याल से चुप रहे, पर अुनके अेक साथीने लाठी तानकर कहा—"अरे जा रे तुर्क, घरमें रोने-वालियोंके आँसू पोंछ, नहीं तो वह लाठी पड़ेगी कि लाश फड़कती होगी।"

मुख़्तार साहब ग़ुस्सेसे होंठ चबाकर बोले—"अच्छा, पानी तो मीरसाहबके खेतमें जायगा, पर तुम्हारे ख़ूनमें रंगीन !" फिर नौकरोंको डाँटा—"तुम सब-के-सब घरमें चूड़ियाँ पहनकर बैठो।

अगर मुसल्मान तुम्हारे ही जैसे बोदे होते तो फिर काहेको हिन्दुस्तानमें क़दम टिकता।"

जोशमें भरे हुअे लोगोंको धर्म और मर्दानगीके नामपर अुमारना जलती हुअी लकड़ियोंपर मिट्टीका तेल छिड़कना है। सभीने लाठियाँ अुठा लीं और पिल पड़े। ठाकुर धनपतसिंहने आदमियोंसे तो लड़नेका अिशारा कर दिया, पर आप लाठी लिये अलग खड़े रहे। शेर और लेमड़ीका मुकाबला नहीं होता। मालिक टकेके नौकरोंसे क्या लड़ते। मीर साहब होते तो दिलेरीसे हमले होते, वीरोंका-सा बचाव होता और नियमपूर्वक लड़ाअी होती। यह छोटोंकी लड़ाअी थी, ठाकुरका अिसमें कौन-सा मौक़ा? लेकिन छोटोंको बड़ोंसे लड़नेमें ही मज़ा आता है। नौकर जब मालिकके बराबर के दुश्मनका अपमान कर ले तब अुसकी आबरू बढ़ती है। अिसलिये मीरसाहबके अेक आदमीने ठाकुरको ताना मारा—"बड़े मर्द हैं, नौकरोंकी जान जाय, आप औरतोंकी तरह डरसे दूर खड़े हैं!"

कालेको टोक देना जितना ख़तरनाक है अुतना ही राजपूतको। ठाकुरकी आँखें लाल हो गयीं, नथने फैल गये और छलाँग मारकर मजमेमें घुस गये। पहले जहाँ घायल और बेकार करनेका अिरादा था, अब जान लेने और जान देनेका पक्का निश्चय कर लिया। अिसलिये जहाँ पहले हाथ-पाँव टूट रहे थे, वहाँ अब सर फटने लगे। थोड़ी देरमें घायलों और मरने वालोंके ढेर लग गये। मुख्तार साहबने बातपर जान दे दी। मरकर गिरे तो ठाकुर ही के अेतमें, लेकिन नालीपर क़ब्ज़ा ठाकुर ही का रहा। पानी भी ख़ूनसे रंगीन था, लेकिन ठाकुरकी

जगह अुन्हींके ख़ूनसे और जा भी रहा था, पर मीरसाहबकी जगह धनपतसिंहके ख़ूनमें ।

३

मुक़दमा चला और बड़े ज़ोर-शोरसे चला । ठाकुर धनपतसिंहपर क़तलका अिलज़ाम लगाया गया । ज़मानत भी मंज़ूर नहीं हुअी । मामूली मुज़रिमोंकी तरह पकड़कर बंद कर दिये गये । दोनों तरफ़से नामी-से-नामी वकील बुलाये गये । रुपया पानीकी तरह बहाया जाने लगा । पहले घरकी जमासे शुरआत हुअी; फिर अुधार शुरू हुआ । थोड़े दिनोंमें 'गोरू-बछेरू' बिकने लगे । फिर गाँवमें हाथ लगा । अेकके बाद दूसरेकी बारी आयी और दूसरेके बाद तीसरेकी । सिर्फ़ वह भाग रह गया जिसपर झगड़ा चल रहा था और माँ व पत्नीके गहने । फिर भी मुक़दमेकी सूरत बिगड़ी ही रही । सारे गवाहोंका बयान हो चुका था, सिर्फ़ मीरसाहबका बयान बाक़ी था । अगर अुन्होंने भी सख़्तीमें ठाकुरके ख़िलाफ़ बयान दे दिया, तो फिर ठाकुरकी जान की ख़ैर नहीं थी ।

बूढ़ी माँ और जवान पत्नी यही बातें कर रही थीं । दोनोंको धनपत प्यारा था, दोनोंका हृदय अिस आनेवाली बिपतासे टुकड़े-टुकड़े हो रहा था । अेककी कोख जलती थी, दूसरेका सुहाग जाता था । घरमें बैठनेवाली औरतें क्या करें जो अपने प्यारेको बचा लायें । सिवाय चुपके-चुपके रोने और दूसरेको रामकी दयाका विश्वास दिलाने के और बस ही क्या था ।

अेकाअेक बूढ़ी ठकुराअिनने कुछ सोचा । बहूसे अपने गहनोंका

सन्दूक़ मँगवाया। फिर अुससे सारे गहने अुतारनेको कहा। अुन गहनों को भी अुसीमें रक्खा और पीनस तैयार करनेका हुक्म दिया। बहूने पूछा—"कहाँ जाअियेगा?"

ठकुराअिन बोली—"आकर बताअूँगी।" और पीनसमें बैठकर सीधी मीरक़दीर हुसेनके घर पहुँचीं।

कहारोंने जिस समय पीनस डयोढ़ीमें अुतारी तो मीरसाहब बाहर ही थे। ठकुराअिन बग़लमें सन्दूक़ दबाये, मामाओंसे पूछती, वहाँ पहुँचीं जहाँ सैदानी बैठी थीं। सलाम करके बराबरमें बैठ गयीं। मीरक़दीरकी माँ भी ज़माना देखे थीं। अेक नज़रमें ताड़ गयीं कि कौन है और किस ग़रज़से आयी है। पूछा—"आप धनपतसिंहकी माँ हैं?" अिन्होंने सर हिलाकर अेकरार किया। सैदानीने अब और भी नर्मी और हमदर्दीसे पूछा—"ठकुराअिन साहिबा, आप कैसे आयीं!"

अुनकी हमदर्दी-भरी बात कलेजेपर तीरकी तरह लगी, लेकिन राजपूतनीने आँखसे आँसू न निकलने दिये। गम्भीरतासे बोलीं—"हमारे-आपके घरकी लड़ाअी आज कोअी नयी बात नहीं, स्वामियोंके समयसे चली आती है। फिर भी, न हमारी अिज़्ज़तपर हमला हुआ, न आपकी, लेकिन अब तो अिज़्ज़त भी जाया चाहती है और जान भी!"

मीरसाहबकी माँ बोली—"तो बीबी, अिसमें क़सूर किसका है? न आपके बेटेने दूसरेकी जान ली होती और न आज जानपर बनती।"

ठाकुरकी माँ ग़रज़वाली थी। अिसलिये नम्रतासे बोली—"मरे हुअे फिरसे जी न अुठेंगे, धनपत आपके क़दीरकी तरह मेरा अेकलौता है, अुसकी जान बचाकर मुझे भी जिलाअिये।"

अेक दिलकी कैफ़ियत दूसरे दिलने महसूस की बड़ी बीने सर झुका लिया। "बेटे सबके बराबर होते हैं, सबकी माअें अेक ही तरह प्यार करती हैं। अगर आज क़दीरपर यही समय पड़ता तो?" सोचनेसे ही काँपने लगीं। अेक मामाकी तरफ़ पलटकर बोलीं—"क़दीरको बुलाओ।"

मीरसाहब अुस समय वकीलोंके मजमेमें बैठे हुअे अपने बयान की तैयारीमें लगे थे। फ़िक्र यह थी कि जिरहमें कोअी अैसा लफ़्ज़ ज़बानसे न निकलने पाये जिससे धनपतसिंह फाँसीसे बच सके। बस सदाके लिये यह झगड़ा ही मिट जाय। पच्चीस बरससे अधिककी खानदानी-अटक दिलसे निकल जाय। वकील कहते थे—"अैसा ही होगा। क्या मजाल जो बच जाय! फाँसी तो यक़ीनी है, अिसमें कोअी शक नहीं।" माँने जो बुलाया तो खुश-खुश अन्दर आये, यहाँ अेक हिन्दू स्त्रीको बैठे देखकर पूछा—

"यह कौन हैं?"

माँने कहा—"यह मेरी बहन हैं, सलाम करो!"

मीरसाहबने बंदगी की और माँके अिशारेपर पास ही खामोश बैठ गये। बड़ी बी थोड़ी देर चुप रहीं, फिर बोलीं—"क्यों क़दीर, बदला लेना अच्छा है या माफ़ करना? अिसलामने क्या बताया है?"

मीरसाहबने अिस सवालपर घबराकर माँका मुँह देखा फिर ठकुराअिनपर नज़र की। वह बोलीं—"मियाँ, मैं अपने बेटे धनपतकी सिफ़ारिश लेकर आयी हूँ।"

धनपतनका नाम सुनते ही मीरसाहब आग हो गये। कुछ नर्म-गर्म कहना ही चाहते थे कि माँने हाथके अशारेसे रोककर कहा —"बेटे, तुमने मेरी बातका जवाब न दिया! बदला लेना अच्छा है या माफ़ करना?"

मीरसाहबने गुस्सा पीनेके लिये सर झुका लिया, फिर बोले— "जी, माफ़ करना।"

वह मुसकराकर मोहबतसे बोलीं—'बेटा, धनपतकी खता माफ़ कर दो!"

मीरसाहबने कहा—"अम्माँजान, आप अिस मामलेमें दख़ल न दीजिये, यह नामुमकिन है। आख़िर मेरे मुख़्तारकी जान मुफ़्तकी तो नहीं थी। अुसके भी तो बाल-बच्चे हैं, भला मैं अुनको क्या मुँह बतलाअूँगा?"

ठकुराअिन आजिज़ीसे बोलीं—"मियाँ आज पच्चीस बरससे हमारा-तुम्हारा ख़ानदान अेक दूसरेको जानता है। भला किसीके यहाँ तुमने यह भी सुना कि मैं कोअी ग़रज़ लेकर गयी हूँ? आज अैसी ही विपता पड़ी है जो दौड़ी आयी। कुछ मेरे आनेकी लाज रखो। मैं तुमसे बिनती करती हूँ। यह सन्दूक़ गहनोंसे भरा है, जो कुछ मेरे और धनपतकी दुलहनके पास था सब अिसमें हैं। अिसे मुख़्तारके घरवालोंको दे दो और धनपतकी जान बचा दो!"

मीरसाहबने गुस्सेमें कहा—"जानका बदला गहने नहीं हो सकते।"

ठकुराअिनने फिर गिड़गिड़ाकर कहा—"मैं तो आज भिआरिन बनकर आयी हूँ, मैं बदला देने नहीं आयी। मैं माँ हूँ, अगर तुम धनपतकी जगह मेरी जान लेना चाहो तो मुझे ख़ुशीसे मंज़ूर। बस, मेरा धनपत बच जाय अितना ही चाहती हूँ। सैयद दयालु होते हैं, क्या तुम मेरी-सी भिआरिनको यों ही ख़ाली हाथ लौटा दोगे?"

मीरसाहबने गर्दन झुका ली। बड़ी बीने हाथ बढ़ाकर करीब भींच लिया और बोले—"बेटे, सोच काहेका है? मैं ठकुराअिनको बहन पुकार चुकी, फिर भी तुम सोच-विचारमें पड़े हो। जब धनपत अिसी तरह अपनी माँकी छातीसे लगके बैठेगा तब मेरा कलेजा ठंडा होगा।"

मीरसाहबकी झुकी हुअी गर्दन और झुक गयी। गुस्सा और बदला लेनेके जोशको दबानेकी कोशिशने आँखोंमें मिर्चें-सी लगा दी थी। शिकारी जानवर शिकारको गिरफ़्तार करके फिर नहीं छोड़ते। अगर कोअी छीननेकी कोशिश कर बैठता है तो अुसीपर हमला कर देते हैं। अिन्सान भी दुश्मनको कब्ज़में पाकर हैवान बन जाता है। मीरसाहबके यहाँ भी अगर अेक तरफ़ अेख़लाक़ (शिष्टाचार), मुरौअत, अिन्सानियत और माँके हुक्मके पालनका ख़याल था तो दूसरी तरफ़ वही हैवानियत। मुक़ाबला सख़्त था। देर तक रोशनी और अँधेरके देवताओंमें लड़ाअी हुअी, फिर बिजलीकी-सी लहर चेहरेपर दौड़ने लगी। ठकुराअिन घूँघटसे सब कुछ देख रही थीं। आशा-भरे लहजेमें बोलीं—"सैयद, अब भिआरिनको दान दे डालो।"

मीरसाहबने सिर उठाया और काँपते हाथ जोड़कर कहा—"ख़ाला ! जो तुम चाहती हो वही होगा !"

४

तीन दिनके बाद ठाकुर धनपतसिंह बेदाग़ छूटकर घर पलटे। उन्हें बड़ा अचम्भा था कि मीरसाहब सबूतकी जगह सफ़ाईके गवाह कैसे बन गये। ख़ुश लेकिन ताज्जुबमें भरे घर पहुँचे। माँ आँगनमें खड़ी दिखायी दी। चरन छूनेके लिये झुके तो उन्होंने उनका सिर ममता-भरी छातीसे लगा लिया और थोड़ी देर चुप खड़ी रोती रहीं। फिर सिर उठाकर आँखें मिलाकर बोलीं—"अभी सीधे मीरक़दीरके यहाँ जाओ और उनसे माफ़ी माँगो। वह बड़े दयालु हैं। उन्हींने तुम्हारी जान मुझे दान दी है।"

धनपतसिंहका चेहरा ग़ुस्सेसे लाल हो गया, लेकिन माँका रोब उसे ज़ाहिर करनेसे रोके रहा। धीरेसे पूछा—"क्या मामला है ? मैं नहीं समझा।"

अेक मुँह लगी कहारिन, जो पास ही खड़ी थी, जल्दीसे बोल उठी—"बबू, ठकुराअिन मीरसाहबके घर गयी रहीं। उनकी मातासे सिफ़ारिस करके तुमका छुड़ाअिन हैं !"

अभिमानी राजपूत माँकी तरफ़ पलट पड़ा—"आप उनके घर गयी थीं ?"

ठकुराअिनने कहा—"हाँ !"

वह क्रोधसे बक उठकर बोला—"आपको पिताजीकी अिज़्ज़तका ख़याल न रहा !"

माँने प्रेम-भरे लहजेमें जवाब दिया—"मुझे बेटेकी जानका ज़्यादा ख़याल था।"

ठाकुर होंठ चबाता उल्टे पाँव बाहर चला गया। अभिमानी राजपूतके लिये मुक़दमेकी बदनामी ही क्या कम थी, माँके दुश्मनके घर जानेकी ख़बरने उसे पागल बना दिया। अरब घोड़ेकी तरह न उसे ऊँचा दिखायी देता था, न नीचा और न अब बालू और पानीमें फ़र्क देखनेकी समझ रह गयी थी। गुस्सा था, शर्म थी, अपने अभिमानपर चोट पहुँचनेका सदमा था!

उसने उसी समय मुख़्तारको भेजकर स्टाम्प मँगवाया और बाक़ी जायदादका हिबानामा तैयार करके घोड़ेपर बैठा और काग़ज़ समेत मीरसाहबकी कोठीपर पहुँचा।

मीरसाहब देहाती रईसोंकी तरह तख़्तपर बैठे थे। आस-पास गाँवके दूसरे लोगोंका मजमा था। हुक़्केका दौर था। गप लड़ रही थी कि धनपतसिंह घोड़ेपर सवार उनके पास पहुँचे और घोड़ेपर बैठे-ही-बैठे काग़ज़ उनके सामने फेंककर बोले—"यह लीजिये! यह आपके नाम मेरी बची खुची जायदादका हिबानामा है। आप समझते थे कि मैं अेहसान करके राजपूतकी गर्दन नीची कर दूँगा। जब बराबरी ही न रहेगी तो मुक़ाबला क्या ख़ाक करेगा; पर धनपत अितना गिरा नहीं कि वह अेहसान मुफ़्त ले। वह जिस तरह लाठीका बदला लाठीसे देता है, उसी तर अेहसानके बदलेमें अेहसान भी कर सकता है। आपने अगर मेरी जान बचायी तो मैंने भी आपको अपनी सारी ज़ायदाद दे दी।"

मीरसाहब अुसके अिस तरह अेकाअेक आनेसे घबरा गये थे। चुपके मुँह ही देखते रहे। लेकिन अेक साथके बैठनेवाले बोले—"ठाकुर, कुछ दिवाने हो गये हो?"

वह बोला—"ठाकुर दीवाना हो या पागल, वह ठाकुर है! वह किसीका अेहसान नहीं ले सकता!" और फिर घोड़ेको अेड़ लगाकर निकल गया।

बस हलके-फुलके बादलकी तरह अेक क्षण ठहरा, दो छींटे दिये और फिर हवाके साथ था!

५

मीरसाहब वह काग़ज़ लिये माँके पास पहुँचे। अुनसे सारा क़िस्सा बयान किया और पूछा—"अब क्या हुक्म होता है?"

वह थोड़ी देर तक सोचकर बोलीं—"पीनस मँगाओ, मैं ख़ुद चलूँगी और तुम भी साथ चलो। शरीफ बड़ी मुश्किलसे मिलते हैं। तुम्हें अुससे सफ़ाअी करनी होगी।"

पीनसमें बूढ़ी माँ और साथमें घोड़ेपर मीरसाहब, दोनों अेक घंटे बाद धनपतसिंहके यहाँ पहुँचे। वह गुस्सेमें भरे हुये अब तक बाहर ही टहल रहे थे। मीरसाहबको देखकर मुँह फेर लिया। अुन्होंने क़रीब जाकर नर्मीसे कहा—"मेरी माँ आयी हैं।" यह सुनते ही धनपतसिंहके बदनमें कँपकँपी-सी पड़ गयी। अुन्होंने मीर साहबको अजीब बेबसीसे देखा और वहीं पलंगपर सर नीचा करके बैठ गये।

अधर ड्योढ़ीमें जब पीनस लगी तो ठकुराअिनने बड़ी बी का बड़े तपाकसे स्वागत करके अुनसे आनेका कारण पूछा। वह बोलीं—"धनपत और क़दीरको ड्योढ़ीपर बुलाओ।" दोनों बुलाये गये और किवाड़से लगकर खड़े हो गये।

मीरसाहबकी माँने दरवाज़ेसे हाथ निकालकर काग़ज धनपत-सिंहकी तरफ़ बढ़ाया और बोलीं—"धनपत! तुम्हारी माँ क़दीरके पास मिआरिन बनकर गयी थीं, आज मैं तुम्हारे पास आयी हूँ।"

राजपूतकी आंखोंसे गर्म-गर्म आँसू टप-टप ज़मीनपर गिरने लगे हाथ जोड़कर बोला—"माता! चाहती क्या हैं?"

वह बोलीं—"दिलोंकी सफ़ाअी।"

अुसने कहा—"परमेश्वर जानता है। अब मेरे दिलमें कोअी खोट नहीं।"

अुन्होंने हिबानामाको हरकत देकर कहा—"तो फिर अिसे ले लो। तुम्हें तुम्हारी जायदाद मुबारक हो। अितने बचे-खुचे हिस्सेसे फिर फलो फूलो।"

अुसने अभिमानसे सर अुठाकर कहा—"माता! राजपूत किसीको चीज़ देकर वापस नहीं लेता।"

बड़ी बी ने मोहब्बतसे जवाब दिया—"हाँ सच है, तुमने अपने भाअीको दिया था, अब मेरे हाथसे पाते हो। देखो. तुमने मुझे माता कहा है। मेरा हुक्म मानो!"

ठकुराअिनने बढ़कर कहा—"बेटा, अब अिन्कार करनेका समय

नहीं है, काग़ज़ ले लो। क़दीर मियाँसे मिल जाओ। अरे, 'बड़ा मज़ा अुस मिलापमें है जो सुलह हो जाय जंग होकर!"

ठाकुरने काँपते हाथोंसे काग़ज़ लिये, फिर झुककर मीरसाहबकी माँके पावँकी धूल सरसे लगा ली।

आगोराकी प्रदर्शिनीमें

क्रियो था ग्रीसका गुलाम और सूमा थी अुसकी बहन। वह रात-दिन अपनी छेनी और हथौड़ी लिये निर्जीव पत्थरोंकी सजीली मूर्तियाँ गढ़नेमें लगा रहता। कला ही अुसका जीवन थी और वही प्राण। अपने काममें वह अैसा लीन रहता कि न अुसे खाने-पीनेकी सुध रहती, न सोनेकी। भोजन बनाकर सूमा अपने भाअीको सूचना देती कि खाना तैयार है, आओ खा लें।

क्रियो कहता—"अच्छा चलो, तुम परसो, मैं यह अेक खरोंच मिटाकर अभी आ रहा हूँ। सूमा खाना परोस देती, पर क्रियो न पहुँचता। वह फिर आती और तक़ाज़ा करती। क्रियो फिर आनेका वादा करता, पर अपने काममें जुटा रहता। झुँझलाकर सूमा आती और अुसकी छेनी छीन लेती, बक-झक करती, तब कहीं क्रियो अुठता और खाना खाता। कभी-कभी अैसा होता कि सूमा चिल्लाती रहती और क्रियो अुसे अनसुना कर अपने काममें जुटा रहता। तब वह खाना

परोसकर अुसके कामकी जगह ही आ धमकती और गरम-गरम आना अुसके होठोंसे ढगाती। क्रियो चौंककर पूछता—"अच्छा, आना तैयार हो गया?"

सूमा प्यारसे अैंठकर कहती—"जी सरकार!"

क्रियो भोलेपनसे पूछता—"तो फिर तुमने मुझे आवाज़ क्यों नहीं दी? मैं वहीं आकर आ लेता।"

सूमा और भी अैंठकर कहती—"जी, मुझसे बड़ी भूल हुअी!" और तब वह खिलखिलाकर हँस पड़ती।

"अजी हज़रत! अेक घण्टे तक चिल्लाती रही पर आपके कानोंमें तो ये पत्थरकी मूर्तियाँ घुस रहीं हैं, आप सुनें कैसे?"

पूरी सचाअीके साथ क्रियो कहता—"सचमुच, मुझे तो मालूम ही नहीं कि तुमने कब आवाज़ दी।"

सूमा भाअीके अिस भोलेपनपर निहाल हो जाती और बार-बार लाड़में डूबकर अपने भाअीका माथा चूम लेती। क्रियो आधी-आधी रात तक काम करता रहता। अेक दिन मुँह-अन्धेरे सूमा सोकर अुठी, तो देखा, क्रियो अपनी मूर्तिके अन्धेको अन्तिम स्पर्श दे रहा है। रातको जब सूमा सोने गयी तो क्रियो अिस कन्धेको गोलाओ रहा था। आश्चर्यसे अुसने पूछा—"क्या आज तुम अभी तक नहीं सोये?" चौंककर क्रियोने पूछा—"क्या सोनेका समय हो गया सूमा? बस द छेनियाँ मारकर अभी सोता हूँ।"

नाराज़ होकर सूमाने कहा—'नहीं, सोनेका समय अभी नहीं हुआ, अुसमें तो अभी १५ घंटोंकी देर है।"

प्रश्नोंसे भरी आँखोंसे क्रियोने कुछ पल सूमाकी ओर ताका और तब अुसे सूझ पड़ा कि सोनेका नहीं, यह जागनेका समय है। सूमाकी नाराज़ीका ध्यान कर क्रियोने कहा—"ओह रानी बहन आज तो पता ही न चला कि रात कब चली गयी। अच्छा ख़ैर, आज तो तुम माफ़ करो, मैं अब सब काम ठीक समयपर किया करूँगा।"

सूमाकी नाराज़ी दयामें बदल गयी। वह अुसके पास आ बैठी। अपने अिस भोले भाअीके कन्धेपर प्यारसे हाथ रखकर अुसने कहा—"अच्छा, यह तो बताओ कि तुमपर यह धुन क्या सवार है कि पत्थरोंकी मूर्तियोंमें तुम ख़ुद पत्थर हुअे जा रहे हो?"

"सच बताअूँ?"

हाँ, बिल्कुल सच।"

बात यह है कि जल्दी ही हमारे देशमें अेक नुमायश होनेवाली है। अुसमें देश-भरके कलाकारोंकी कृतियाँ रखी जायँगी। अिनमें जिसकी कला सर्वोत्तम होगी अुसे पेरीक्लीज अपने हाथसे मुकुट पहनायँगे।"

"तो फिर?"

"तो फिर क्या? मैं चाहता हूँ कि यह मुकुट अेक ग़ुलामके सिर रखा जाय और हमारे देशके अूँचे लोग देखें कि क़ानूनकी ताक़तसे जिन्हें अुन्होंने ग़ुलाम बना रखा है, समाजके अिन्सानी अधिकारोंसे जो लोग वंचित हैं, वे भी भगवानके ही पुत्र हैं—अुन्हें भी वे गुण प्राप्त हैं जो मनुष्यको अूँचा अुठाते हैं और यदि क़ानूनकी

गलघोटनीसे अुनका गला छूटे तो वे भी अैसे काम कर सकते हैं जिनसे सारे देशका सर अूँचा हो ''

अुत्साहसे क्रियोका चेहरा चमक आया। तभी अुनके कानमें पड़ी डोन्डीकी-सी आवाज़। अुत्सुक हो सूमाने कहा—''मुहल्लेमें मालूम होता है मदारी आया है। चलो, तमाशा देखें। तुम्हारा जी भी बहल जायगा।'' पर तभी अुन दोनोंने सुना—''देशकी शासन-सभाने यह फैसला किया है कि गुलाम लोग अपनी हैसियतके लायक समाजके छोटे छोटे ही काम करें, अिसलिये अैलान किया जाता है कि आजसे जो कोअी गुलाम कला या साहित्यका काम करेगा, अुसे फाँसी दे दी जायगी।''

यह सरकारी डोन्डीवालेकी आवाज़ थी। सुनते ही जब सूमाने भाअीकी ओर देखा, तो वह खिड़कीके नीचे सिर पकड़े बैठा था। सूमा भी अुसके पास बैठ गयी। क्रियोने सूने मनसे पूछा—''सूमा अब क्या होगा?''

घबड़ाअी हुअी सूमा भाअीको लिपट गयी और अचानक अुसके मुँहसे निकला—''आओ, हम अिन मूर्तियोंको तोड़ डालें। कोअी देख लेगा तो भैया, तुम्हें पकड़ ले जायगा।''

क्रियोने पागलकी तरह सूमाको झकझोरकर अपनेसे दूर कर दिया। अुसकी वाणीमें अुसकी आत्मा पुकार अुठी—''ओह सूमा, अिससे तो अच्छा है कि तुम मेरी पसलियाँ ही तोड़ डालो।''

२

अगोरामें कला प्रदर्शिनी लगी तो देश भरकी जनता अुसे देखने अुमड़ पड़ी। अेक-अेक कलाकारकी कलाके नमूने अेक-अेक स्थानपर सजाये गये थे। और वहीं अेक-अेक सुन्दर फलकपर कलाकारका परिचय दिया गया था। जो कलाकार स्वयं पदर्शिनीमें अुपस्थित थे, अुनकी कृतियोंके साथ ही अुनके लिअे भी स्थान दिया गया था, जहाँ वे बैठे रहते थे। साधारण दर्शक तो कलाके नमूनों और कलकारोंके दर्शन करके ही तृप्त हो जाते थे, पर कला-पारखी दर्शक स्वयं कलाकारोंसे परिचय करते थे। और अुनकी कलाकी बारीकियोंपर बातचीत कर कृतार्थ होते थे। कलाकारोंके प्रति सम्मानका भाव तो साधारण और असाधारण सभी प्रकारके दर्शकोंमें था।

अिस प्रदर्शिनीके पिछले चौमुहानेपर अेक साधारण और छिपी हुअी-सी चौकीपर पत्थरकी आठ प्रतिमाअें सजी हुअी थीं। प्रतिमाअें कहने-भरको ही पत्थरकी थीं, पर देखनेमें बोल रही थीं। आकृतिकी भावभंगिमा, देहका अुतार-चढ़ाव और वातावरणका चुनाव-निर्माण अितना सजीव था कि देखते ही आँखें खुली रह जातीं और पैर जमीनपर चिपक-से जाते थे। अिन मूर्तियोंके सामने भीड़ अितनी अधिक थी कि शान्ति-रक्षकोंको बार-बार दर्शकोंसे आगे बढ़नेका अनुरोध करना पड़ता था।

अिन मूर्तियोंका निर्माता कौन है! यह प्रश्न धीरेसे अुठा और वेगसे सब दर्शकोंमें फैल गया। बात यह थी कि न तो वहाँ स्वयं

कलाकार अुपस्थित था और न परिचय-फलकपर ही कलाकारका परिचय दिया हुआ था। यहाँ तक कि शान्ति-रक्षक और व्यवस्थापक यह भी बतानेमें असमर्थ थे कि कब, कौन अिस करीनेसे अिन मूर्तियोंको सजा गया है। जिज्ञासा अुत्सुकताके पंखोंपर चढ़ी प्रदर्शिनीमें अुड़ रही थी और अनुमानके घोड़े चारों ओर दौड़ रहे थे! लोग पागल हो रहे थे कि अिन मूर्तियोंके निर्माताका पता लग जाय और अुसे अपने प्यार और श्रद्धाके फूलोंसे ढक दें!

गुप्तचरोंने अचानक अेक पंद्रह-सोलह सालकी लड़कीको पकड़ लिया और वे अुसे पेरीक्लीजके सिंहासनकी ओर घसीट ले चले। अुत्सुकताके वातावरणमें सनसनी-सी छा गयी।

"यह लड़की कलाकारको जानती है, पर बताती नहीं"—गुप्तचरोंका यह विश्वास था। लड़कीके कपड़े अस्त-व्यस्त थे और बाल बिखरे हुअे, पर अुसके चेहरेपर अेक अैसी दृढ़ता थी, जो सबका ध्यान अपनी ओर खींचती थी।

दर्शकोंके सैकड़ों कण्ठ अुससे अेक साथ पूछ अुठे—"हमें अुस महान कलाकारके दर्शन कराओ बेटी जिसने हमारे देशका सिर अपनी कलासे अूँचा कर दिया है। हम अुसपर अपने प्यार और सम्मानकी वर्षा कर कृतार्थ होंगे।"

लड़की अब भी चुप थी। स्वयं पेरीक्लीजने प्यारसे अुससे यही बात पूछी, पर वह तब भी चुप रही। शासकका क्रोध जाग अुठा। सन्तरियोंको अुसने हुक्म दिया कि "अिस बदमाश लड़कीको कैद-

खानेमें बन्द कर दो, जहाँ यह घुल-घुलकर मरे और अपनी दुष्टताका फल पाये। हटाओ अिसे मेरे सामनेसे!" सन्तरियोंने अुस सुकुमारी कन्याकी मुश्कें मज़बूत रस्सियोंमें बाँधीं और वे अुसे कैदखानेकी ओर ले चले। दर्शक अब भी क्रोधसे तिलमिला रहे थे। अुनके मनका प्रश्न अब और भी तीव्र हो गया था—"अिन मूर्तियोंका निर्माता कौन है?"

३

भीड़को चीरकर तभी अेक युवक पेरीक्लीजके सामने आ खड़ा हुआ। अुसने पेरीक्लीजके सामने सिर झुकाया और तब ज़ोरसे कहा—"अिस लड़कीको आप क्षमा कर दीजिये। अिसका कोअी दोष नहीं है। अिन मूर्तियोंका निर्माण मेरे अिन हाथोंने किया है।"

"फिर अितने दिन अपनेको क्यों छिपाया?"

"क्योंकि मैं अेक गुलाम हूँ और देशके नये कानूनके अनुसार गुलामोंके लिये कलाके कार्य वर्जित हैं।"

जन-समूह क्रोधसे हुंकार अुठा—"अेक गुलामको यह हिम्मत कि देशका कानून तोड़े और फिर शासकको धोखा दे? अिसे कठोर दंड दिया जाये महाराज!"

भीड़मेंसे अेक आवाज़ आयी—कठोर दण्ड कुछ नहीं, अिसे फाँसी दी जाये।"

कुछ लोग चिल्ला अुठे—"फाँसी-वासी कुछ नहीं, अिस पाजीको हमें सौंप दीजिये। हम अिसे ढेलोंसे मारेंगे।"

अेक आवाज़ आयी—"ठीक है। वह बहुत कलाका अवतार बनता है। हम अिसकी अैसी कला बनायेंगे कि अिसकी सारी जाति याद रखेगी।"

पेरीक्लीज अपने आसनसे अड़े हुअे। क्रियो और सूमाको लगा कि अुनके गलेमें फाँसीका फन्दा बस अब पड़ने ही वाला है। भीड़में सन्नाटा छा गया।

पेरीक्लीज अूँची आवाज़में बोले—"आप चाहते हैं कि अिस कलाकारका अन्त कर दिया जाये। पर मित्रो, जब तक मैं जीवित हूँ यह नहीं हो सकता। अेक बार अुन मूर्तियोंको देखो और फिर अेक बार आसमानमें झाँको। मुझे लगता है कि कलाके देवता भगवान अपोलो स्वयं कह रहे हैं कि हमारे देशका यह कानून कितना जाहिम है। किसी भी कानूनका अुद्देश्य कलाका विकास होना चाहिये, विनाश नहीं। अिसलिये अैसे कलाकारोंका स्थान कैदखानोंमें नहीं, यहाँ मेरे पास है।'

"यदि विद्रोहियोंके प्रति देशके शासक अैसी दयालुता दिखायेंगे तो फिर राष्ट्रके सम्मानकी रक्षा कौन करेगा?" भीड़मेंसे अेक आवाज़ आयी।

"कलाकार हो या साहित्यकार, विद्रोहियोंका स्थान कैदखानोंमें है, सिंहासनोंके पास नहीं!" अेक दूसरी आवाज़ सुनायी दी।

पेरीक्लीजने गम्भीर होकर कहा—"मित्रो, मैं आपके अुत्साहका मान करता हूँ। पर अितिहास कैदखानोंके कारण नहीं, कलाकारोंके कारण ही हमारा सम्मान करेगा।"

भीड़ चुप रही। पेरीक्लीजने अपना हाथ बढ़ाकर क्रियोको अपने पास भींच लिया। जनताने देखा—पेरीक्लीज क्रियोके सिरपर विजयका मुकुट रख रहे हैं और वह नम्रता और अुल्लासके प्रवाहमें

डूबा-सा जा रहा है। तभी श्रीमती अेस्पीसियाने सूमाको अपने पास खींचकर चूम लिया।

अब जनता हर्ष-विह्वल हो तालियाँ बजा रही थी! देशके प्रमुख पुरुष सुकरात, फीडियस, साफोक्लीज बिना पलक झपके यह सब देख रहे थे और आकाश मुस्कराकर किसीको कह रहा था—"यह दुनिया भी अजी नाटक है। अभी दो पल पहले जो लोग फांसीके हकदार थे, वे अब अितिहासके निर्माता हैं।"

मनकी माया

मधुपुर गाँवकी, सैकड़ों स्त्री-पुरुषों, बूढ़े-बच्चोंकी बस्तीमें पंडित गयादीन और अुनकी स्त्री राधा सबसे अनोखे स्वभावके मनुष्य हैं।

वैसे छोटे बच्चोंसे किसे स्नेह नहीं होता, मगर अिन बूढ़े दम्पतिका स्नेह सबसे विचित्र है। गाँवमें छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब किसीका बच्चा कहीं मिल गया, बस कन्धेपर बैठाये गाँव-भरमें घूम रहे हैं, और फिर कहीं यह चीज़ ख़रीदकर बच्चोंको खिला रहे हैं, कहीं वह चीज़। वहीं पड़ोसमें शीतलदीन हैं। वह भी बूढ़े ही हैं, मगर शायद ही कभी किसीने अुनकी गोदमें कोअी बच्चा देखा हो, जैसे संसारमें अुनके लिये छोटे बच्चेका होना न होना कोअी अर्थ ही नहीं रखता। और अिधर पंडित गयादीनका यह हाल है कि जैसे अुनके लिये संसारका बच्चों

अतिरिक्त कोअी मूल्य ही नहीं है। मनुष्य-मनुष्यके स्वभावमें कितना अन्तर है!

पंडित गयादीनकी अुम्र ६० वर्षकी होनेको आयी! ६० वर्ष बहुत होते हैं। कितने ग्रीष्म और कितने वसन्त अिन ६० वर्षोंमें बीत जाते हैं। कितने फूल अिलते हैं और कितने मुरझा जाते हैं। कितने पौधे वृक्ष हो जाते हैं और कितने वृक्ष गिर जाते हैं। यही नहीं, कितने बच्चे बाप हो जाते हैं और कितने मर जाते हैं। संसारमें अिन ६० वर्षोंमें क्या क्या हो जाता है। मगर ससा में अिस प्रकारके अगणित परिवर्तनोंके बाद भी पंडित गयादीनका स्वभाव न बदलना था, न बदला—जैसे अिस संसारका कोअी नियम अुनपर लागू ही नहीं होता; जैसे वह अिस संसारमे रहते हुअे भी संसारसे अलग रहते हों; जैसे वह माया-रूपी मनुष्य हों।

आज कितने दिन, कितने महीने और वर्ष अिस गाँवमें रहते हुअे अुन्हें बीत गये हैं, मगर अुनके स्वभावमें ज़रा भी अन्तर नहीं आया। अुनकी स्नेह-वत्सलता जैसी-की-तैसी बनी हुअी है। कहीं जायें, कुछ करें, मगर बच्चोंका स्नेह अेक क्षणके लिये भी अुनके हृदयसे नहीं निकलता। हाट-बाज़ार जाते हैं, मेले-ठेले जाते हैं; कहीं जाते हैं, कहींसे आते हैं; कुछ भी करते-धरते हैं; मगर दो-चार पैसोंका बच्चोंके लिये बिना कुछ लाये अुनसे रहा नहीं जाता।

अुधर पंडिताअिनका स्वभाव भी पंडितके जैसा ही है। वह पंडितजीके चौअौटके अुधर पाँव रखते ही प्रश्नोंकी झड़ी लगा देती हैं। यह चीज़ क्यों लाये, वह चीज़ क्यों नहीं लाये? बताअो क्यों लाये,

जलेबियाँ क्यों नहीं लाये ? और पंडितजी किसी-न-किसी प्रकार समझा-बुझाकर अन्हें शांत करते हैं।

पंडित गयादीन और अनकी स्त्री राधा कोअी बच्चे नहीं हैं, बुद्धिमान मनुष्य हैं। संसारका अु-हें बहुत कुछ अनुभव है। अितनी अुम्रमें कितने पराये अुनके अपने बन चुके हैं और कितने अपने पराये बन चुके हैं। कितनोंके लिये अुन्होंने क्या सोचा है, और क्या हुआ है। और भी न मालूम अुन्हें कितना अनुभव है। संसारकी कितनी वास्तविकताओं और यथार्थताओंको अुन्होंने निकटसे देखा-भाला और जाँचा-परखा है। वह कभी-कभी सोचते हैं, आपसमें रातको देर तक बातें करते रहते हैं कि व्यर्थ पैसा फेंकना ठीक नहीं है; अपना-अपना है, पराया-पराया है। मगर ज्यों ही सुबह होती है, अुनका स्वभाव जैसा-का तैसा ही बना रहता है और अुस सारे सोच-विचारका कहीं पता ही नहीं रहता, जैसे अुन्होंने जागतेमें स्वप्न देखा हो या स्वप्नमें जागे हों।

२

पंडित गयादीनने कहा—"अिस संसारमें भी कैसे-कैसे मनुष्य पड़े हैं!"

"क्यों क्या हुआ?"—पंडितजीकी स्त्री राधाने अुत्सुकताके साथ पूछा।

"लोगोंके जवान लड़के बैठे हैं, मगर विवाहकी चिन्ता नहीं करते।"

"अपनी-अपनी समझ, अिसको कोअी क्या करे!"

"यह तो ठीक है, मगर.....।"

"हाँ, जब लड़के-लड़कियाँ सयाने हों तो विवाह तो कर ही देना चाहिये।"

"यही तो। आज दुर्गाप्रसादसे पूछा कि शंकरका विवाह करनेका कब तक विचार है? कहने लगे कि अभी विवाह-अवाहकी क्या बात। हमने सोचा - वाह भाभी, यह भी अेक ही आदमी है। पूछो...."

"बाजे आदमीको टुटरूँ टूँ' रहना ही अच्छा लगता है। पूछो, जवान लड़का है, विवाह करो, नाती हो। बिना नन्हें-बारेके घर कोओ घर है।"— राधाने अपनी सहज-स्वाभाविक अवस्थामें कहा।

"बाजे-बाजे आदमी अैसे होते हैं कि चाहे जितना कोओ समझाये मगर अुनको समझमें कुछ नहीं आता।"

"हाँ, बाजे आदमीकी समझ.....।"

"अुस दिन दीनदयालसे कहा कि बबुआ न पकड़ाओ बच्चेको, नहीं तो कहीं पटक देगा तो रह जाओगे हाथ करके। आखिर न समझे और वही हुआ।"

"क्या पटक दिया?"—राधाने कौतूहल और अुत्सुकताके साथ पूछा।

"आखिर बच्चा तो बच्चा ही है, वह क्या समझे कि.....।"

"था अच्छा बबुआ?"—राधाने फिर पूछा।

"हाँ, असल और नकलमें कोओी फर्क ही नहीं मालूम पड़ता था।"

"तब तो बहुत पछताये होंगे?"

"कुछ पूछो न, बड़ी देर तक माथा पकड़े बैठे ही रहे।"

"अैसा ही होता है, मगर आदमी पहले कहाँ समझता है!"

३

"सुनती हो कुछ !"—पंडित गयादीनने शब्दोंपर ज़ोर देते हुअे कहा ।

"हाँ, हाँ, भाअी ! आज अितनी देर....जानते हो कि...."

"आओ तुम्हें अेक ख़ुशख़बरी सुनायें, सुनोगी न ? शीतलके लड़केका विवाह हो गया ।"—बड़ी प्रसन्नताके साथ पंडित गयादीनने कहा ।

"शीतल ?"—कुछ सोचते हुअे राधाने कहा ।

"हाँ, हां, शीतलके लड़केका विवाह हो गया ।"

"शीतलके लड़केका विवाह ! कब हुआ ?"

राधाने तरह-तरहसे शीतल और शीतलके लड़केके सम्बन्धमें सोचते और अुसने अपने नाते-रिश्तेकी अपने मनके असीम संसारमें ओज लगाते हुअे कहा :—

"जवान लड़का था, विवाह होना ही चाहिये था, और अब....।"

"हाँ हाँ, और अब..... ।"

अिसी प्रकार पंडित गयादीन बड़ी देर तक शीतलके लड़केके विवाहके सम्बन्धमें बातें करते रहे; और राधा अपने मानसिक संसारमें शीतलसे अपने सम्बन्धकी ओज लगानेका प्रयत्न करती रही ।

४

चौअटके अुधर पैर रखते ही पंडित गयादीनने बड़ी प्रसन्नताके साथ कहा :—

"सुना कुछ तुमने ? नरायणके यहाँ लड़का पैदा हुआ है !"

"नरायनके यहाँ लड़का पैदा हुआ है!"—द्विगुणित प्रसन्नताके साथ राधाने अपर्युक्त शब्द दोहराये।

"हाँ, नरायनके यहाँ.....।"

"नरायन, नरायनके यहाँ.....!"—पंडित गयादीनने फिर अुसी प्रसन्नताके साथ कहा :—"हाँ, नरायनके यहाँ लड़का पैदा हुआ है!"

बड़ी देर तक पंडित गयादीन नरायन और नरायनके यहाँ लड़का पैदा होनेके सम्बन्धमें न मालूम क्या-क्या कहते रहे और अुधर राधा गम्भीरताके साथ मन-ही-मन सोचती रही—"नरायन, नरायनके यहाँ लड़का पैदा हुआ है। मगर कौन है नरायन? क्या सम्बन्ध है नरायनसे मेरा?" और ज़रा देरके लिये अुसे अैसा मालूम होने लगा जैसे नरायनको वह जानती है, जैसे नरायनसे अुसका सम्बन्ध है; और जैसे नरायनके यहाँ लड़का पैदा होनेके अर्थ.....भावोंके वेगमें वह न जाने कहाँसे कहाँ पहुँच गयी।

फिर ज़रा देरके बाद राधाने कहना शुरू किया :—"कैसा सुंदर बच्चा है, देखा है न तुमने?"

"हाँ, हाँ, बड़ा सुंदर है, क्या कहना है!"

"जैसे कोअी स्वर्गसे अुतरा हुआ देवता हो!"

"हाँ, अिसमें क्या सन्देह.....अैसा सुंदर बच्चा.....।"

"अैसा सुंदर.....हाँ, हाँ, वह जो रघुराजके यहाँ पैदा होनेके कुछ देर बाद ही मर गया था! और, और अुससे भी सुंदर वह जो

रामनाथके यहाँ मरा हुआ ही पैदा हुआ था। मैं कहता हूँ कि अुसकी सुन्दरता..... ।

"अच्छा !"

"हाँ, अैसा सुन्दर तो मैंने कहीं देखा ही नहीं !"

"कितना सुन्दर था वह ?"

"हाँ जो कहता हूँ ।"

पंडित गयादीन अिसी प्रकार कहते रहे और राधा मौन न जाने क्या-क्या सोचती रही। अुसे अैसा मालूम होने लगा जैसे रघुराज और रामनाथके बच्चेको वह देख ही रही है। यही नहीं, बल्कि ज़रा देरके लिये अुसे अैसा मालूम होने लगा जैसे वह बच्चे.....और अुसका चेहरा मारे प्रसन्नताके किसी बच्चेके चेहरेकी ही तरह खिल अुठा।

५

सुबह शीतलदीनकी स्त्री जानकीने जो शब्द कहे हैं, वे राधाके हृदयमें तीरकी तरह बिंध गये हैं। दिन-भरमें न जाने कितनी बार वह रो चुकी है। सुबहसे शाम हो गयी, मगर जानकीके शब्द अुससे भुलाये नहीं भूलते।

आज राधाका मन दिन-भर किसी काममें न लगा। यहाँ तक कि आँगनमें लगे हुअे फूलोंकी ओर भी अुसने ध्यान न दिया।

पंडित गयादीनने दिन-भरके बाद जब घर आकर पत्नीकी अैसी दशा देखी तो अुनपर जैसे दुखोंका पहाड़ टूट पड़ा। कहाँ वह क्या

क्या सोचते हुअे आये थे, मगर पत्नीकी अैसी दशा देअकर अुनको सारी बातें मनकी मन ही में रह गयीं।

ज़रा देर तक मौन रहनेके बाद अुन्होंने पूछा—"आख़िर क्या बात है, आज तुम अितनी अुदास क्यों हो?"

"कुछ तो नहीं, तुम्हें अैसे ही भ्रम हो गया है।"—राधाने बनावटी मुस्कराहटके साथ बातको टालनेका प्रयत्न करते हुअे कहा।

"मुझसे छिपाती क्यों हो, कहाँ तो रोज़....और कहाँ आज।"—पंडित गयादीनने करुण स्वरमें कहा।

"नहीं जो कहती हूँ, अैसे ही ज़रा-सा सरमें दर्द हो गया है।"—टालनेका प्रयत्न करते हुअे राधाने फिर कहा।

"सरमें दर्द हो गया है, अच्छा तो लाओ मैं.....।"

"नहीं, नहीं, अभी सब ठीक हो जायेगा। तुम.....।"

राधाकी बातोंसे पंडित गयादीनको ज़रा भी सन्तोष न हुआ और वह बड़ी देर तक अुदास बैठे न जाने क्या क्या सोचते रहे।

६

अिधर कअी दिनोंके बाद पत्नीके अुदास मुअकको पंडित गयादीनने जो आज अेकाअेक खिला हुआ देखा तो अुनकी प्रसन्नताकी सीमा न रही, और अिसके पहले कि वह दुलारे कुम्हारके बनाये हुअे बबुअेके सम्बन्धमें कुछ कहें, राधाने मुस्कुराते हुअे कहना प्रारम्भ किया:—

"आज तुमको मैं अेक ख़ुशीकी बात सुनाना चाहती हूँ, सुनोगे?"

"हाँ, हाँ।"—द्विगुणित प्रसन्नताके साथ पंडित गयादीनने कहा।

"हाँ, तुम क्या समझते हो ?"

"मैं ?"

"हाँ, कि मैं क्या.....?"

"अच्छा, अच्छा, सुनाओ अब ।"

"बोलो, क्या दोगे ?"

"पहले सुनाओ तो ।"

"नहीं पहले करार हो जाना चाहिये ।"

"तो क्या तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास नहीं है ?"

"मगर तुम बेईमानी कर जाओ तो, मनका क्या ठिकाना !"

"अच्छा तो जो तुम कहो ।"

"जो हम कहेंगी, वह दोगे ।"

"हाँ भाभी, हाँ ।"

"भूल न जाना ।"

"नहीं भाभी, तुम ..... "

आज पति पत्नीमें रात गये तक अिसी प्रकार प्रसन्नताके साथ बातें होती रहीं । वह अपनी बातोंमें अितने तन्मय थे कि आकाशमें नक्षत्रोंकी जग-जगाहट और चन्द्रमाके अिलनेकी ओर भी अुनका ध्यान न गया ।

७

राधाने अुत्सुकताके साथ पूछा:—"क्यों, है न अच्छी तरकीब ?"

"हाँ, हाँ, अिसमें भी कुछ सन्देह हो सकता है।"—आकाशकी ओर देखते हुअे पंडित गयादीनने कहा।

"अितने दिनोंसे सोचती रही, मगर कुछ समझमें नहीं आता था। आज भगवान्‌ने अकस्मात् मनमें यह तरकीब डाल दी, सचमुच भगवान् बड़ा दयालु है।"

"क्या कहना है भगवान्‌की दयालुताका, भगवान् जिसको जो चाहे वह दे दे।"

"वही तो कहती हूँ कि भगवान् बड़ा दयालु है, कैसी बात सुझा दी।"

"और कुछ नहीं सुना, रघुवर पंडितके यहाँ बच्चा पैदा हुआ है। बताओ मुझमे भी अुम्रमें बड़े हैं, ६० से अूपर होनेको आये।"

"हाँ, सचमुच भगवान् बड़ा दयालु है। बताओ, अगर यह बात भगवान् न सुझाता तो कभी दुःख दूर हो सकता था? और फिर....हाँ अिसमें कोअी वैसी बात भी तो नहीं है, है न ठीक?"

"हाँ, और क्या।"— पंडित गयादीनने फिर आकाशकी ओर देखते हुअे कहा।

"सुना है जो ज्ञानी लोग हैं वह किसी चीज़में भेद नहीं मानते, है न ठीक? तुमने तो पढ़ा भी होगा?"

"हाँ, हाँ, ज्ञानी लोग किसी चीज़में अन्तर नहीं मानते, यह तो ठीक ही है।"—पंडित गयादीनके मुँहसे अपने आप ही यह शब्द निकल गये।

"और है भी तो ठीक। अन्तर है कहाँ, सोना और मिट्टी आखिर अेक ही वस्तु तो हैं ?"

"और क्या।"—पंडित गयादीनने फिर कहा।

"हम सब मिट्टी ही के तो हैं। जैसे यह धूल वैसे ही शक्कर, वैसे ही यह आटा। मैं पूछती हूँ क्या अन्तर है अिनमें ? अन्तर मानना अज्ञानियोंका—मूर्खोंका ही तो काम है ! क्यों है ना ठीक ?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं।"—पंडित गयादीनके मुँहसे समय-समय पर अिस प्रकार शब्द निकलते जैसे किसी मशीनसे निकल रहे हों।

८

पिछली रातका समय था। चारों ओर साँय-साँय हो रही थी, जैसे सारा संसार श्मशान भूमि हो। अेकाअेक पंडित गयादीनके घरसे बड़े ज़ोरसे रोने-चिल्लानेकी आवाज़ें आने लगीं। क्षण-भरमें सारा मधुपुर गाँव जग पड़ा। मगर अैसा जैसे स्वप्नमें जगा हो। देखते-देखते यह बात गाँवमें फैल गयी कि पंडित गयादीनके यहाँ मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ है।

जिसने सुना, अुसीके आश्चर्यकी सीमा न रही।

यद्यपि अिस बातपर गाँवके लोग तरह-तरहसे विचार करते, मगर किसीकी समझमें कुछ नहीं आता।

× × ×

पंडित गयादीनके पड़ोसी शीतलदीनकी स्त्री जानकी आज तड़के ही हारकी ओर चल पड़ी।

पंडित गयादीनके यहाँ मरे हुअे बच्चेका जन्म सारे गाँवके साथ अुसके लिये भी अेक समस्या थी। मगर पता नहीं क्यों, रह-रहकर अुसका हृदय अिस बातकी सत्यताके प्रति विद्रोही हो अुठता था।

अिस सम्बधमें मन-ही-मन सोचते हुअे वह चली जा रही थी कि अकस्मात् अुसकी नज़र दो कुत्तोंपर पड़ी. जो किसी चीज़को नोच-नोच कर खा रहे थे। पहले तो वह कुछ ठिठकी, मगर फिर साहस बटोर-कर देखा, अरे यह तो आटेका.....और वह अेकदम अुछल पड़ी, जैसे अुसे कोअी बड़ी चीज़ मिल गया हो। वह दौड़ती हुअी गाँवको लौटी और क्षण-भरमें यह विचित्र बात गाँव-भरको सुना दी।

× × ×

अुपर्युक्त घटनाको बहुत दिन बीत गये हैं। कअी पीढ़ियाँ आयीं और गयीं, मगर मधुपुर गाँवमें यह घटना ज्यों-की-त्यों लोगोंको याद है; और अिसी घटनाके कारण पंडित गयादीन और राधाका नाम भी जीवित है।

अुसने कहा था

बड़े-बड़े शहरों के अिक्के-गाड़ीवालोंकी ज़बानके कोड़ोंसे जिनकी पीठ छिल गयी और कान पक गये हैं, अुनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसरके बम्बूकार्टवालोंकी बोलीका मरहम लगायें। जब बड़े-बड़े शहरोंकी चौड़ी सड़कोंपर घोड़ेकी पीठको चाबुकसे धुनते हुअे अिक्केवाले कभी घोड़ेकी नाकसे अपना निकट सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलोंकी आँखोंके न होनेपर तरस खाते हैं, कभी अुनके पैरोंकी अुँगलियोंके पोरोंको चीथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार-भरकी ग्लानि, निराशा और क्षोभके अवतार बने नाकको सीध चले जाते हैं, तब अमृतसरमें अुनकी बिरादरीवाले, तंग, चक्करदार गलियोंमें हरअेक लड्ढेवालेके लिये ठहरकर, सबका समुद्र अुमड़ाकर, 'बचो खालसा जी.' 'हटो भाअीजी' 'ठहरना भाअी', 'आने दो लालाजी', 'हटो बाच्छा', कहते हुअे सफ़ेद फेटों, अुघरों और बतकों, गन्ने और ओमचे और भारेवालोंके जंगलमेंसे राह खेते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और 'साहब' बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि अुनकी जीभ चलती ही नहीं, चलती है, पर मीठी छुरीकी तरह महीन मार करती है। यदि कोअी बुढ़िया बार-बार चितौनी देनेपर भी लोकसे नहीं हटती, तो अुनकी बचनावलीके नमूने हैं—'हट जा, जीणो जोगिये; बच जा, करमा बलिये; हट जा, पुत्ताँ प्यारिये; बच जा, लंबी बलिय।' समष्टिमें अिसका अर्थ है कि 'तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रोंकी प्यारी

है, लम्बी अुमर तेरे सामने है, क्यों मेरे पहियोंके नीचे आना चाहती है ? बच जा ।'

अैसे बम्बूकार्टवालोंके बीचमें होकर अेक लड़का और लड़की चौकपर अेक दूकानपर आ मिले । अुसके बालों और अिसके ढीले सुथनेसे जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं । वह अपने मामाके केश धोनेके लिये दही लेने आया था और यह रसोअीके लिये बड़ियाँ । दूकानदार अेक परदेशीसे गुथ रहा था, जो सेर-भर गीले पापड़ों की गड्डीको गिने बिना हटता न था ।

"तेरे घर कहाँ है ?"

"मगरेमें;—और तेरे ?"

"माझेमें; — यहाँ कहाँ रहती है ?"

"अतरसिंहकी बैठकमें, वे मेरे मामा होते हैं ।"

"मैं भी मामाके यहाँ आया हूँ ; अुनका घर गुरुबाज़ारमें है ।"

अितनेमें दूकानदार निबटा और अिनका सौदा देने लगा । सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले । कुछ दूर जाकर लड़केने मुस्कराकर पूछा— "तेरी कुड़माअी हो गयी ?"—अिसपर लड़की कुछ आँखे चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़ गयी और लड़का मुँह देखता रहा गया ।

दूसरे तीसरे दिन सब्जीवालेके यहाँ; या दूधवालेके यहाँ अकस्मात दोनों मिल जाते । महीना भर यही हाल रहा । दो तीन बार लड़केने फिर पूछा—'तेरी कुड़माअी हो गयी ?' और अुत्तरमें वही 'धत्'

मिला। अेक दिन फिर लड़केने वैसे ही हँसीमें चिढ़ानेके लिये पूछा तब लड़की लड़केकी सम्भावनाके विरुद्ध बोली—"हाँ हो गयी।"

"कब ?"

"कल;—देखते नहीं यह रेशमका कढ़ा हुआ साल्।" लड़को भाग गया। लड़केने घरकी राह ली। रास्तेमें अेक लड़केको मोरमें ढकेल दिया, अेक छावड़ीवालेकी दिन-भरकी कमाओ खोयी, अेक कुत्तेपर पत्थर मारा और अेक गोभी वालेके ठेलेमें दूध अुड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुओ किसी वैष्णवीसे टकराकर अन्धेकी अुपाधि पाओ। तब कहीं घर पहुँचा।

२

"राम राम, यह भी कोओ लड़ाओ है! दिन-रात अंदकोंमें बैठे हड्डियाँ अकड़ गयीं। लुधियानेसे दस गुना जाड़ा, और मेंह और बरफ अूपरसे। पिंडलियों तक कीचमें धँसे हुअे हैं। गनीम कहीं दिखाता नहीं;—घंटे दो घंटेमें कानके परदे फाड़नेवाले धमाकेके साथ सरी अंदक हिल जाती है और सौ सौ गज़ धरती अुछल पड़ती है। अिस गैबी गोलेसे बचे तो कोओ लड़े। नगरकोटका जलजला सुना था, यहाँ दिनमें पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं अंदक से बाहर साफा या कुहनी निकल गयी तो चटाक्से गोली लगती है। न मालूम बेअीमान मिट्टीमें लेटे हुअे हैं या घासकी पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

"लहनासिंह, और तीन दिन हैं। चार तो अंदकमें बिता ही दिये। परसों 'रिलीफ' आ जायगी और फिर सात दिनकी छुट्टी। अपने हाथों झटका कोटेंगे और पेट-भर खाकर सो रहेंगे। अुस फरंगी मेमके बागमें

मखमलकी-सी हरी घास है। फल और दूधकी वर्षा कर देती है। लाओ कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्कको बचाने आये हो।"

"चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्चका हुक्म मिल जाय। फिर सात जर्मनोंको अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहबकी देहलीपर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहींके, कलोंके घोड़े—संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अँधेरेमें तीस-तीस मनका गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था—चार मील तक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल साहबने हट आनेका कमान दिया, नहीं तो—"

"नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते क्यों!"—सूबेदार हजारासिंहने मुस्कराकर कहा—"लड़ाईके मामले जमादार या नायकके चलाये नहीं चलते। बड़े अफसर दूरकी सोचते हैं। तीन सौ मीलका सामना है। अेक तरफ़ बढ़ गये तो क्या होगा?"

"सूबेदारजी, सच है।"—लहनासिंह बोला—"पर करें क्या? हड्डियोंमें जो जाड़ा धँस गया है। सूर्य निकलता ही नहीं और आओंमें दोनों तरफ़से चंबेकी बावलियोंके-से सोते झर रहे हैं। अेक धावा हो जाय तो गरमी आ जाय।"

"अुदमी अुठ, सिगड़ीमें कोयले डाल। वजीरा, तुम चार जने बाल्टियाँ लेकर आओंका पानी बाहर फेंको। महासिंह, शाम हो गयी

है, आकाके दरवाज़ेका पहरा बदला दे।"—यह कहते हुअे सूबेदार सारी अंदकमें चक्कर लगाने लगे।

वज़ीरासिंह पलटनका विदूषक था। बाल्टीमें गँदला पानी भरकर आगीके बाहर फेंकता हुआ बोला—"मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मनीके बादशाहका तर्पण!"—अिसपर सब अिलअिला पड़े और अुदासीके बादल फट गये।

लहनासिंहने दूसरी बाल्टी भरकर अुसके हाथमें देकर कहा—"अपनी बाड़ीके अरबूजोंमें पानी दो। अैसा आदका पानी पंजाब-भरमें नहीं मिलेगा।"

"हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लड़ाअीके बाद सरकारसे दस गुना ज़मीन यहाँ माँग लूँगा और फलोंके बूटे लगाअूँगा।"

"लाड़ीहोराँको भी यहाँ बुला लोगे? या यही दूध पिलानेवाली फरंगी मेम—"

"चुप कर। यहाँवालोंको शरम नहीं।"

"देस-देसकी चाल है। आज तक मैं अुसे समझा न सका कि सिख तमाखू नहीं पीते। वह सिगरेट देनेमें हठ करती है, ओठोंमें लगाना चाहती है, और मैं पीछे हटता हूँ तो समझती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुल्कके लिये लड़ेगा नहीं।"

"अच्छा अब बोधसिंह कैसा है?"

"अच्छा है।"

"जैसे मैं जानता ही न होअूँ। रात-भर तुम अपने दोनों कंबल

अुसे अुढ़ाते हो और आप सिगड़ीके सहारे गुजर करते हो। अुसके पहरेपर आप पहरा दे आते हो अपने सूझे लकड़ीके तख्तोंपर अुसे सुलाते हो, आप कीचड़में पड़े रहते हो। कहीं तुम न माँदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है मौत है और "निमोनिया" से मरनेवालोंको मुरब्बे नहीं मिला करते।"

"मेरा डर मत करो। मैं तो बुलेलकी झड़ूडेके किनारें मरूँगा भाभी कीतरसिंहकी गोदमें मेरा सिर होगा और मेरे हाथके लगाये हुअे आँगनके आमके पेड़की छाया होगी।"

वजीरासिंहने त्योरी चढ़ाकर कहा—"क्या मरने-मरानेकी बात लगाअी है। मरे जर्मनी और तुरक। हाँ भाअियो, कुछ गाओ। हाँ कैसे—

"दिल्ली शहर ते पिशौर नूँ जांदिअे
कर लेणा लौंगा दा व्यौपार मंडिअे;
कर लेणा नाड़ेदा सौदा अड़िअे—
(ओय) लाणा चटाका कद्दुअे नूँ।
कद्दू बण्डाअे मजेनार गोरिअे,
हुण लागा चटाका कदुअे नूँ।।"

कौन जानता था कि दाढ़ियोंवाले, घरबारी सिख अैसा लुच्चोंका गीत गायेंगे, पर सारी झंदक गीतसे गूँज अुठी और सिपाही फिर ताज़े हो गये, मानो चार दिनसे सोते और मौज़ ही करते रहे हो।

३

दो पहर रात हो गयी है। अँधेरा है! सन्नाटा छाया हुआ है। बोधसिंह खाली बिसकुटोंके तीन टीनोंपर अपने दोनों कंबल बिछाकर

और अेक बरानकोट ओढ़कर सो रहा है। लहनासिंह पहरेपर अड़ा हुआ हैं। अेक आँख आअीके मुँहपर है और अेक बोधसिंहके दुबले शरीरपर। बोधसिंह कराहा।

"क्यों बोधा भाअी, क्या है!"

"पानी पिला दो।"

लहनासिंहने कटोरा अुसके मुँहसे लगाकर पूछा—"कहो, कैसे हो?" पानी पीकर बोधा बोला—"कँपनी छूट रही है। रोम-रोममें तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे हैं।"

"अच्छा मेरी जरसी पहन लो।"

"और तुम?"

मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गर्मी लगती है; पसीना आ रहा है।"

"ना, मैं नहीं पहनता, चार दिन से तुम मेरे लिये—"

"हाँ, याद आयी मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आयी है। विलायतसे मेमें बुन-बुनकर भेज रही हैं। गुरु अुनका भला करें।"—यों कहकर लहना अपना कोट अुतारकर जरसी अुतारने लगा।

"सच कहते हो?"

"और नहीं झूठ!"—यों कहकर नाहीं करते बोधाको अुसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप आकी कोट और जीनाका कुरता भर पहनकर पहरेपर आ अड़ा हुआ। मेमकी जरसीकी कथा केवल कथा थी।

आधा घण्टा बीता। अितनेमें आफ़ीके मुँहसे आवाज़ आयी—"सुबेदार हजारासिंह!"

"कौन? लपटन साहब? हुकुम हुजूर!"—कहकर सूबेदार तनकर फ़ौजी सलाम करके सामने हुआ।

"देखो, अिसी दम धावा करना होगा। मील भरकी-दूरीपर पूरबके कोनेमें अेक जर्मन आफ़ी है। अुसमें पचाससे जियादह जर्मन नहीं हैं। अिन पेड़ोंके नीचे-नीचे दो अेत काटकर रास्ता है। तीन-चार घुमाव हैं। जहाँ मोड़ है वहाँ पन्द्रह जवान अड़े कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोड़कर सबको साथ ले अुनसे जा मिलो। अन्दक छीनकर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहाँ रहेगा।"

"जो हुक्म।'

चुपचाप सब तैयार हो गये। बोधा भी कंबल अुतारकर चलने लगा। तब लहनासिंहने अुसे रोका। लहनासिंह आगे हुआ तो बोधाके बाप सुबेदारने अँगलीसे बोधाकी ओर अिशारा किया। लहनासिंह समझकर चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, अिसपर बड़ी हुज्जत हुअी। कोअी रहना नहीं चाहता था। समझा-बुझाकर सुबेदारने मार्च किया। लपटन साहब लहनाकी सिगड़ीके पास मुँह फेरकर अड़े हो गये और जेबसे सिगरेट निकालकर सुलगाने लगे। दस मिनिट बाद अुन्होंने लहनाकी ओर हाथ बढ़ाकर कहा—

"लो तुम भी पियो।"

आँखें मारते-मारते लहनासिंह सब समझ गया। मुँहका भाव

छिपाकर बोला—"लाओ, साहब।" हाथ आगे करते ही सिगड़ीके अुजालेमें साहबका मुँह देखा। बाल देखे। तब अुसका माथा ठनका। कप्तान साहबके पट्टियोंवाले बाल अेक दिनमें कहाँ अुड़ गये और अुनकी जगह कैदियोंके से कटे हुअे बाल कहाँ से आ गये?

शायद साहब शराब पिये हुअे हैं और अुन्हें बाल कटवानेका मौका मिल गया है? लहनासिंहने जाँचना चाहा। कप्तान साहब पाँच वर्षसे अुसकी रेजिमेंटमें थे।

"क्यों साहब, हम लोग हिन्दुस्तान कब जायँगे?"

"लड़ाअी ख़त्म होनेपर। क्यों, क्या यह देश पसंद नहीं?"

"नहीं साहब, शिकारके वे मज़े यहाँ कहाँ? याद है पारसाल नकली लड़ाअीके पीछे हम-आप जगाधरीके ज़िलेमें शिकार करने गये थे?"—"हाँ हाँ हाँ—वहीं जब आप ओतेपर सवार थे और आपका ख़ानसामा अब्दुल्ला रास्तेके अेक मंदरमें जल चढ़ानेको रह गया था!" "बेशक, पाजी कहींका"—"सामनेसे वह नीलगाय निकली कि अैसी बड़ी मैंने कभी न देखी थी। और आपकी अेक गोली कंधेमें लगी और पुट्ठेसे निकली! अैसे अफ़सरके साथ शिकार खेलनेमें मज़ा है। क्यों साहब, शिमलेसे तैयार होकर अुस नीलगायका सिर आ गया था न? आपने कहा था कि रेजिमेंटकी मेसमें लगायेंगे!" "हो, पर मैंने वह विलायत भेज दिया"—"अैसे बड़े-बड़े सींग! दो दो फुटके तो होंगे!"

"हाँ, लहनासिंह, दो फुट चार अिंचके थे। तुम सिगरेट नहीं पिया?"

"पीता हूँ साहब, दियासलाओ ले आता हूँ ?" — कहकर लहना-सिंह अन्दकमें घुसा। अब अुसे संदेह नहीं रहा था और अुसने झटपट निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिये।

अँधेरेमें किसी सोनेवालेसे वह टकराया।

"कौन ? वजीरासिंह ?"

"हाँ, क्यों लहना ? क्या क़यामत आ गयी ? ज़रा तो आँख लगने दी होती !"

४

"होशमें आओ। क़यामत आयी है और लपटन साहबकी वर्दी पहनकर आयी है।"

"क्या !"

"लपटन साहब या तो मारे गये हैं या क़ैद हो गये हैं। अुनकी वर्दी पहनकर यह कोओी जर्मन आया है। सूबेदारने अिसका मुँह नहीं देखा है और बातें की हैं। सौहरा साफ़ अुर्दू बोलता है पर किताबी अुर्दू। औ॰ मुझे पीनेको सिगरेट दिया है।"

"तो अब ?"

"अब मारे गये। धोखा है, सूबेदार कीचड़में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ आओीपर धावा होगा। अुधर अुनपर अुलेमें धावा होगा। अुठो, अेक काम करो। पलटनके पैरोंके निशान देखते-देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गये होंगे। सूबेदारसे कहो कि अेकदम लौट आयें। अन्दककी बात झूठी है चले जाओ, अन्दकके पीछेसे निकल जाओ। पत्ता तक न अुड़के। देर मत करो।"

"हुकुम तो यह है कि यहीं—"।

"ऐसी-तैसी हुकुमकी ! मेरा हुकुम—जमादार लहनासिंह जो इस वक़्त यहाँ सबसे बड़ा अफ़सर है, उसका हुकुम है। मैं कपटन साहबकी ख़बर लेता हूँ।"

"पर यहाँ तो तुम आठ ही हो।"

"आठ नहीं, दस लाख। एक-एक अकालिया सिख सवा लाखके बराबर होता है। चले जाओ।"

लौटकर खाईके मुहानेपर लहनासिंह दीवारसे चिपक गया। उसने देखा कि कपटन साहबने जेबसे बेलके बराबर तीन गोले निकाले। तीनोंको जगह-जगह बन्दककी दीवारोंमें घुमेड़ दिया और तीनोंमें एक तार-सा बाँध दिया। तारके आगे सूतकी एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ीके पास रखा। बाहरकी तरफ़ जाकर एक दियासलाई जलाकर गुत्थीपर रखने—

बिजलीकी तरह दोनों हाथोंसे उलटी बन्दूकको उठाकर लहनासिंहने साहबकी कुहनीपर तानकर दे मारा। धमाकेके साथ साहबके हाथसे दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंहने एक कुन्दा साहबकी गर्दनपर मारा और साहब "आँख! मीन गौट्ट" कहते हुए चित्त हो गये। लहनासिंहने तीनों गोले बीनकर बन्दकके बाहर फेंके और साहबको घसीटकर सिगड़ीके पास लिटाया। जेबोंकी तलाशी ली। तीन-चार लिफ़ाफ़े और एक डायरी निकालकर उन्हें अपने जेबके हवाले किया।

साहबकी मूर्छा हटी। लहनासिंह हँसकर बोला—"क्यों कपटन साहब? मिज़ाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा

कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरीके ज़िलेमें नीलगाय होती है और अुनके दो फुट चार अिंचके सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान आनशामा मूर्तियोंपर जल चढ़ाते हैं और कप्टन साहब ओतेपर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो, अैसी साफ़ अुर्दू कहाँसे सीख आये? हमारे कप्टन साहब तो बिना "डैम" के पाँच लफ़्ज भी नहीं बोला करते थे।"

लहनाने पतलूनकी जेबोंकी तलाशी नहीं ली थी। साहबने, मानों जाड़ेसे बचानेके लिये दोनों हाथ जेबोंमें डाले।

लहनासिंह कहता गया—"चालाक तो बड़े हो, पर माँझेका लहना अितने बरस कप्टन साहबके साथ रहा है। अुसे चकमा देनेके लिये चार आँखें चाहिये। तीन महीने हुअे, अेक तुरकी मौलवी मेरे गाँवमें आया था। औरतोंका बच्चे होनेको तावीज़ बाँटता था और बच्चोंको दवाअी देता था। चौधरीके बडके नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनीवाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़कर अुसमेंसे विमान चलानेकी बिद्या जान गये हैं। गौको नहीं मारते। हिन्दुस्थानमें आ जायँगे तो गोहत्या बन्द कर देंगे। मंडीके बनियोंको बहकाता था कि डाकख़ानेसे रुपये निकाल लो, सरकारका राज्य जानेवाला है। डाक-बाबू पोल्हुराम भी डर गया था। मैंने मुल्लाजीकी दाढ़ी मूँड दी थी और गाँवसे बाहर निकालकर कहा था कि जो मेरे गाँवमें अब पैर रखा तो—"

साहबकी जेबमेंसे पिस्तौल चली और लहनाकी जाँघमें गोली

लगी। अधर लहनाकी हैनरीमर्टिनीके दो फायरोंने साहबको कपाल-क्रिया कर दी। धड़ाका सुनकर सब दौड़े आये।

बोधा चिल्लाया—"क्या है?"

लहनासिंहने उसे तो यह कहकर सुला दिया कि "अेक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया।" और औरोंसे सब हाल कह दिया। बंदूकें लेकर सब तैयार हो गये। लहनाने साफ़ा फाड़कर घावके दोनों तरफ़ पट्टियाँ कसकर बाँधीं। घाव मांसमें ही था। पट्टियोंके कसनेसे लहूँ बंद हो गया।

अितनेमें सत्तर जर्मन चिल्लाकर आओमें घुस पड़े। सिक्खोंकी बंदूकोंकी बाढ़ने पहले धावेको रोका। दूसरेको रोका। पर यहाँ थे आठ (लहनासिंह तक-तककर मार रहा था। वह अड़ा था; और, और लेटे हुअे थे) और वे सत्तर। अपने मुर्दा भाअियोंके शरीरोंपर चढ़कर जर्मन आगे घुसे आते थे। थोड़े-से मिनटोंमें वे—

अचानक आवाज़ आयी "वाह गुरुजीकी फ़तह! वाह गुरुजीका आलसा!" और धड़ाधड़ बन्दूकोंके फायर जर्मनोंकी पीठपर पड़ने लगे। अैन मौकेपर जर्मन दो चक्कीके पाटोंके बीचमें आ गये। पीछे-से सूबेदार हजारासिंहके जवान आग बरसाते थे और सामने लहनासिंह के साथियोंके संगीन चल रहे थे। पास आनेपर पीछेवालोंने भी संगीन शुरू कर दिया।

अेक किलकारी और—"अकाल सिक्खों दी फ़ौज आयी! वाह गुरुजी दी फ़तह! वाह गुरुजी दी आलसा!! सत्तसीरी अकाल पुरुष!!" और लड़ाअी ख़तम हो गयी। तिरसठ जर्मन तो अेत रहे

थे या कराह रहे थे। सिक्खोंमें पँद्रहके प्राण गये। सूबेदारके दाहिने कन्धेसे गोली आर-पार निकल गयी। लहनासिंह की पसलीमें अेक गोली लगी। अुसने घावको अन्दककी गीली मिट्टीमे पूर लिया। और बाक़ीका साफ़ा कसकर कमरबन्दकी तरह लपेट लिया। किसीको ख़बर न हुअी कि लहनाको दूसरा घाव—भारी घाव—लगा है।

लड़ाअीके समय चाँद निकल आया था। अैसा चाँद, जिसके प्रकाशसे संस्कृत कवियोंका दिया हुआ "क्षयी" नाम सार्थक होता है और हवा अैसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्टकी भाषामें, 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन-भर फ्रांसकी भूमि मेरे टोंसे चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदारके पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंहसे सारा हाल सुन, और कागज़ात पाकर, अुसकी तुरत-बुद्धिको सराह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

अिस लड़ाअीकी आवाज़ तीन मील दाहिनी ओरकी आअीवालोंने सुन ली थी। अुन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहाँसे झटपट दो डॉक्टर और दो बीमार ढोनेकी गाड़ियाँ चलीं, जो कोअी डेढ़ घण्टेके अंदर-अंदर आ पहुँचीं। फ़ील्ड अस्पताल नज़दीक था। सुबह होते-होते वहाँ पहुँच जायँगे, अिसलिये मामूली पट्टी बाँधकर अेक गाड़ीमें घायल लिटाये गये और दूसरीमें लाशें रखी गयीं। सूबेदारने लहनासिंहकी जाँघमें पट्टी बँधवानी चाही। पर अुसने यह कहकर टाल दिया कि थोड़ा घाव है; सबेरे देखा जायगा। बोधसिंह ज्वरमें बर्रा रहा था। वह गाड़ीमें लिटाया गया। लहनाको छोड़कर सूबेदार जाते नहीं थे।

यह देख लहनाने कहा—"तुम्हें बोधाकी क़सम है और सूबेदारनीजीकी सौगंध है जो इस गाड़ीमें न चले जाओ।"

"और तुम?"

"मेरे लिये वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना। और जर्मन मुरदोंके लिये भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं है। देखते नहीं, मैं छड़ा हूँ। बजीरासिंह मेरे पास है ही।"

"अच्छा, पर—"

"बोधा गाड़ीपर लेट गया? भला। आप भी चढ़ जाओ। सुनिये तो सूबेदारनी होरीको चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उन्होंने कहा था, वह मैंने कर दिया।"

गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदारने चढ़ते-चढ़ते लहनाका हाथ पकड़कर कहा—"तुमने मेरे और बोधाके प्राण बचाये हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनीसे तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?"

"अब आप गाड़ीपर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना और कह भी देना।"

गाड़ीके जाते ही लहना लेट गया। "बजीरा, पानी पिला दे और मेरा कमरबन्द खोल दे। तर हो रहा है।"

५

मृत्युके कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ़ हो जाती है। जन्म

भरकी घटनाअें अेक-अेक करके सामने आती हैं। सारे दृश्योंके रंग साफ़ होते हैं; समयकी धुंध बिलकुल अुनपरसे हट जाती है।

× × ×

लहनासिंह बारह वर्षका है। अमृतसरमें मामाके यहाँ आया हुआ है। दहीवालेके यहाँ, सब्जीवालेके यहाँ, हर कहीं, अुसे अेक आठ वर्षकी लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है कि तेरी कुड़माअी हो गयी? तब 'धत्' कहकर वह भाग जाती है। अेक दिन वैसे ही पूछा तो अुसने कहा—"हाँ, कल हो गयी, देअते नहीं यह रेशमके फूलोंवाला साळू?" सुनते ही लहनासिंहको दुःअ हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?

"वजीरासिंह, पानी पिला दे।"

पचीस वर्ष बीत गये। अब लहनासिंह नं० ७७ रायिफल्स जमादार हो गया है। अुस आठ वर्षकी कन्याका ध्यान ही न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी या नहीं। सात दिनकी छुट्टी लेकर ज़मीनके मुकदमेकी पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजामेंटके अफ़सर की चिट्ठी मिली कि फ़ौज लामपर जाती है। फ़ौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंहकी चिट्ठी मिली कि मैं और बोधसिंह भी लाम पर जाते हैं, लौटते हुअे हमारे घर होते जाना। साथ चलेंगे।

सूबेदारका गाँव रास्तेमें पड़ता था और सूबेदार अुसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदारके यहाँ पहुँचा।

जब चलने लगे तब सूबेदार बेड़ेमें से निककर आया। बोला—"लहना, सूबेदारनी तुमको जानती है। बुलाती है। जा मिल आ।"

लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती हैं ? कबसे ? रेजीमेंटके क्वार्टरोंमें तो कभी सूबेदारके घरके लोग रहे नहीं। दरवाज़ेपर जाकर 'मत्था टेकना' कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

"मुझे पहचाना ?"

"नहीं।"

"तेरी कुड़माअी हो गयी ?—धत्—कल हो गयो—देअते नहीं, रेशमी बूटोंवाला साल्लू—अमृतसरमें—"

भावोंकी टकराहटसे मूर्छा खुली। करवट बदली। पसलीका घाव बह निकला।

"वजीरा, पानी पिला"—अुसने कहा था।

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है—"मैंने तेरेको आते ही पहचान लिया। अेक काम कहती हूँ। तेरे तो भाग फूट गये। सरकारने बहादुरीका खिताब दिया है, लायलपुरमें ज़मीन दी है, आज नमकहलालीका मौका आया है। पर सरकारने हम तीमियोंकी घघरिया पलटन क्यों न बना दी जो मैं भी सूबेदारके साथ चली जाती ? अेक बेटा है। फौजमें भरती हुअे अुसे अेक ही वर्ष हुआ। अुसके पीछे चार और हुअे, पर अेक भी नहीं जिया।" सूबेदारनी रोने लगी—"अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग ! तुम्हें याद है, अेक दिन ताँगेवालेका घोड़ा दहीवालेकी दूकानके पास बिगड़ गया था। तुमने अुस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़ेकी लातोंमें चले गये थे और मुझे अुठाकर दूकानके तख्तेपर खड़ा कर दिया था। अैसे ही अिन दोनोंको बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।"

रोती-रोती सूबेदारनी ओबरीमें चली गयी। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।

* * *

लहनाका सिर अपनी गोदीपर रखे वज़ीरासिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आध घंटे तक लहना चुप रहा, फिर बोला—

"कौन ! कीरतसिंह !"

वजीराने कुछ समझाकर कहा—"हाँ।"

"भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ठपर मेरा सिर रख ले।"

वजीराने कुछ वैसा ही किया।

"हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस। अबके हाडमें यह आम खूब फलेगा। चाचा-भतीजा दोनों यहीं बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीनेमें मैंने उसे लगाया था।"

वजीरासिंहके आँसू टप्-टप् टपक रहे थे।

* * *

कुछ दिन पीछे लोगोंने अखबारोंमें पढ़ा—

फ्रांस और बेलजियम—६८ वीं सूची—मैदानमें घावोंसे मरा—नं० ७७ सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह।

कठिन शब्दार्थ

गंगा-लाभ

मान मानता–देवी देवता मनाना।
निपूते–निःसन्तान।
मेढ–अँची लकीर, बांध।
यथाशक्ति–शक्तिभर।
जवार–जात बिरादरी, पास-पड़ोस।
अराधना–पूजा, भक्ति।
ब्रहम-मुहूर्त–बहुत तड़के।
साज-सँभाल–व्यवस्था, देखभाल।
विधिवत–नियमानुसार।
टिकठी–मुर्दा अुठानेके लिये चार बांस जोड़कर बना हुआ चौअटा।
साध–अभिलाषा, अिच्छा।
कतकी–कार्तिकका कार्तिकी स्नान।
जतन.....कटिहैं–हम अपने दिन किस तरह बितायेंगी, अिसका अुपाय बताते जाना।
बिरहा–अेक प्रसिद्ध लोकगीत।
कलेजा मुँहको आना–बहुत दुखित होना।
गंगा-पुत्र–पंडा।
अदद–संख्या।
पेशानी–मस्तक।
अुभरे–अठे।
फतुही–अेक प्रकारका पहिननेका वस्त्र।
साम–अेक लौहेकी गोल चीज़ जिसे लाठीमें लगाते हैं। लोहेकी मुंडरी।
संयत–चित्त शान्त करके।
भाड़में जाना–घृणा प्रदर्शित करना।
टोला–मुहल्ला।
किफ़ायत करना–कम पैसे ख़र्च करना।
ज़ब्त करना–सब्र करना, सहना।
तेवरोंमें बल पड़ना–भवें तनना, क्रोधित होना।
बार बना आ.के-आकर बाल बनाओ।
आयेन पंडित–पंडितजी, मैं आया।
तेलीका ..मसालची–ख़र्च किसीका हो और बुरा किसीको लगे।
नौआ–नाअी, हजाम।
माँ–में।
मिली भगत–पहलेसे ही आपसमें कुछ तय कर लेना।
कुल्हड–मिट्टीका अेक प्रकारका पात्र।
लौ–दीप शिखा।
तना–जड़ और डालोंके बीचका पेड़का हिस्सा।
झकझोरना–पकड़कर ज़ोरसे हिलाना।
लड़अड़ाते–काँपते हुअे, अस्थिर।
तगादा–तकाज़ा, माँग।

पसेरी–पाँच सेरका वज़न।
झुँझलाना–नाराज होना, झीझना।
करीय जाव–करते जाओ।
अुकड़ूँ–पैरके पंजोंके बल बैठना।
बिन्दु-मात्रेण संस्कृति–किसी भी शब्दके साथ अनुस्वार मिलानेसे ही अुसे संस्कृतका समझ लेना।
पैरोडी–मज़ाक-काव्य।
सांगिताका–दक्षिणाका।
बनावैके लिये–बनाने या सुधारनेके लिये।
कबँहू–कभी भी।
हमका–हमको।
हियाँ–यहाँ।
पालिस-पोसिस–पालना पोसना।
बेटवा–बेटा।
मारे–लिये, वास्ते।
तक रहे हौ–देख रहे हो।
सहेस होअिहै–सहन किया होगा।
ओहके–अुसके।
अून औलना–गुस्सा चढ़ना।
का–क्या।
मनमानी घरजानी–जो मनमें आये वह करना।
बारहाँ–बहादुर।
चुपात जाअित–चुप होते जाना।
संचित करना–बटोरना।
पतावर–अेक प्रकारकी लम्बी घास।
गन्नेके पत्ते।
लपट–ज्वाला।
हलाकान–परेशान, दुअित।
अवान–अिलाना।
डोम–अेक नीच जाति।
भरभराकर–अेक साथ ही।
चलायेव–बात चलाअी, चर्चा छेड़ी।
नअिह और निअिह–मनहूस।
मूँजी–कृपण।
अू कहौ सार मूँजी–वह कहो कि साला कंजूस (अेक गाली)
पौतन–पाता, प्राप्ति होती।
टेटुआ–कंठ।
मुला–लेकिन, अिसपर भी।
रहबार–बेकारकी बातें।

ग़रीबोंका स्वर्ग

जटिल–कठिन।
स्वाद–लज्ज़त, मज़ा।
पुश्त–पीढ़ी।
मारूसी–पैतृक।
झअ मारना–हारकर, लज्जित होकर।
सांवा-मकरा–मामूली क़िस्मके अनाज।
टकटकी बाँधना–अेक टक देखना।
माड़ना–अनाज और भूसेको अलग करनेकी बैलोंद्वारा की जानेवाली क्रिया।
झाबा–अरहरके डंठलोंसे बना हुआ टोकरा।

विवेक शक्ति–सोचने-विचारनेकी ताक़त।

बाँध या बाध–मूँजकी रस्सी।

मन मसोसकर रह जाना–विवशता के कारण मनकी अिच्छा पूरी न कर पाना।

हल फाल–हल और वह चीज़ जिससे ज़मीन खुदती है।

घिग्घी बँधना–मुँहसे आवाज़ न निकालना।

कष्टका प्रतिदान

असबाब–समान।

ओट–आड़।

कृतकार्य–कामयाब।

रन्ध्र–सूराख़।

सन्धियां–जोड़।

कण्टकित–पुलकित।

वायुयान–हवाअी जहाज़।

अूबड खाबड़–अूँचा नीचा स्थान।

संचित–अिकट्ठा।

मारू–जंगी।

बदहवास–पागलपन।

रेंगना–धीरे-धीरे चलना।

छड़–लोहका कड़ा, लम्बा टुकड़ा।

पैरदान–पाँव रखनेकी जगह।

अलस मन्थरता–सुस्ती, मंद गति।

तंद्रा–झपकी।

झंपना–झपकी लेना।

दुर्दान्त–हराया न जा सकनेवाला।

दस्यु–बदमाश, चोर।

निरीह–अुदासीन, दुखी।

विद्रूप–मुँह बनाना, नक़ल अुतारना।

झींगुर–अेक प्रकारका कीड़ा जो रातको धीमी आवाज़में बोलता है, और जिसकी आवाज़को झंकार कहते हैं।

अवसन्न–सन्न हो जाना या रह जाना।

प्रस्तर–पत्थर।

मनोयोग–ध्यान के साथ।

हताहत–मारे जाना, मर जाना।

तीक्ष्णी–पैनी, तेज़।

थाप–अेकपर अेक रखी हुअी बोरोंकी ढेर।

पित्त बिगड़ना–गुस्सा होना।

मिलाप

नमकका हक़ अदा करना–कृतज्ञता दिखाना।

काले दानोंकी तरह न्योछावर करना–दूसरोंका कष्ट दूर करनेके लिये अपने आपको न्योछावर करना। (टोटकेमें सरसोंके काले दानोंको सरसे छुलाते हैं, जिससे समझा जाता है कि बला दूर हो गयी।)

मलका–महारानी।
पुर–चमड़ेका बड़ा थैला जिससे खेत सींचनेके लिये बैलोंके ज़रिये कुएंसे पानी खींचा जाता है।
मेढ़–खेतकी हद।
नाज़–अभिमान।
कारगुज़ारी–कार्यक्षमता।
थोदे–मीरु, ढीले।
पिल पड़ना–टूट पड़ना, घुस पड़ना।
मुजरिम–अपराधी।
पीनस–अेक प्रकारकी सवारी, जिसे कंधेपर आदमी रखकर ले चलते हैं।
मामाअें–नौकरानियाँ।
जानपर बनना–बहुत ही कष्ट होना।
जिरह–तर्क।
आजिज़ी–नम्रता।
मिर्चें सी लगना–जलन होना, दुख होना।
मुरव्वत–शील, स्नेह।
रोब–डर।
मुँह लगाना–निःसंकोच होना।
बल आना–गुस्सेमें भर जाना।
हिसानामा–अेक प्रकारकी अदालती-लिखा-पढ़ी जो जायदादोंके संबंधमें की जाती है।
तपाक–हौंस, प्रेम।
ओट–बुराअी, ओटापन।

आगोराकी प्रदर्शिनीमें

छेनी-पत्थर काटनेका अेक लोहेका छोटा औज़ार।
अरौंच–किसी चीज़से छुरच जानेकी वजहसे जो निशान पड़ जाता है।
निहाल–खुश होना।
झकझोरना–कंधा पकड़कर हिलाना।
मुश्कें बाँधना–हाथ पैर बाँधना।
पाजी–दुष्ट।

मनकी माया

हार–बस्तीसे बाहर खेतोंकी ओर।

अुसने कहा था

बम्बूकार्टवाले–अमृतसरकी अेक बस्ती के रहनेवाले।
मोर–जहाँसे अुँगली मुड़ती है वह जगह।
चीथकर–अलग करके।
लड्ढीवाले–गाड़ीवाले।
लीक–गाड़ीके चक्कोंसे रास्तेमे पड़ी हुअी लकीर।
कुड़माअी–सगाअी।
कढा हुआ–बेल बूटेदार।
सालू–अेक प्रकारकी ओढ़नी।
अन्दक–अड्डे।
ग़नीम–दुश्मन।

साफा–पगड़ी।
कुहनी–कलाओी और कंधेके बीचका वह हिस्सा जहाँसे हाथ मुड़ता है।
रिलीफ–मदद, आराम, बदलेमें काम करके छुट्टी देनेवाला।
झटका–बकरेकी हत्या करनेका सिक्खों का तरीक़ा।
कमान–अेक प्रकारका फ़ौजी अिशारा।
चम्बा–पंजाबका कोओी स्थान।
बावली–कुअेंकी तरह पानीके लिये ओदी हुओी जगह जिसमें ख़ूब पानी रहता है।
आका–नाम-विशेष।
पाधा–पण्डित, पुरोहित।
लाड़ीहोराँ–स्त्रीका आदर-वाचक शब्द।
बुलेल–स्थान विशेष।
अड्ड–गड्ढा।
बरानकोट–बड़ा मोटा कोट जिसे जाड़ोंमें पहिना जाता है।
जरसी–अूनकी बनी हुओी कुर्ती।
माथा ठनका–शक पैदा हुआ।
सौहरा–गाली।
झुडकना–आवाज़ होना (पत्तेकी)।
बेल–अेक गेंदके आकारका फल।
मीन गौट्ट–हाय। मेरे राम!।
आनशामा–आना पकानेवाला।
ओतेपर–गधेपर।
चकमा देना–भुलावा देना, बहकाना।
मंजा–बिछावन, चारपाओी।
कपाल क्रिया–सर फूट जाना, मरना।
दी–की।
अेत रहे–मारे गये।
क्षया–घटता रहनेबाला।
दंतवीणोपदेशाचार्य–अैसी सर्दी जिस से दाँत बजने लगें।
बर्राना–बड़बड़ाना (बीमारीके कारण बेसुध आवाज़में।)
धुंध–धुधलापन।
लामपर–लड़ाओीपर।
बेड़ा–रहनेकी जगह, घर।
तीमियाँ–स्त्रियाँ।
घघरिया–घघरी पहननेवाली, (औरतोंकी)।
ओबरी–घरके अन्दरकी कोठरी, (बैठकसे भिन्न)।
पट्ठ–जाँघ।
हाड–आषाढ़।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा के प्रकाशन

१. हिन्दुस्तानी बालपोथी–१ (नागरी-अुर्दू)	०– ४–०
२. ,, शब्दार्थ–गुजराती, मराठी, असमीया बँगला, पंजाबी, कन्नड, सिंधी, नेपाली, तेलगु हरअेकका	०– ०–६
३. हिन्दुस्तानी बालपोथी–२ (नागरी-अुर्दू)	०–१२–०
४. ,, गुजराती समज	०– २–०
५. ,, मराठी ,,	०– ३–०
६. ,, कन्नड ,,	०– ५–०
७. हिन्दुस्तानी छोटी कहानियाँ (नागरी-अुर्दू)	०– ६–०
८. फुलवारी (गद्य-पद्य संग्रह) नागरी	०–१२–०
९. ,, ,, अुर्दू	१– ०–०
१०.-११ हिन्दुस्तानी कहानियाँ–१ नागरी अुर्दू हरेकका	०– ७–०
१२.-१३ दो आम (नाटिका) नागरी अुर्दू हरेकका	०– ६–०
१४. हिन्दुस्तानी कहानियाँ–२ नागरी	०–१४–०
१५. सितारे (पद्य संग्रह) नागरी	१– ०–०
१६. ,, ,, अुर्दू	१– ८–०
१७. हिन्दुस्तानीके प्रचारक गांधीजी	०– ४–०
१८. हिन्दुस्तानीकी नीति	०– १–०
१९. हिन्दुस्तानी मुहावरा कोश	१– ८–०
२०. प्राचीन कविता संग्रह	१– ८–०
२१. व्याकरणके पारिभाषिक शब्द	०– ३–०
२२. नागरी वर्ण-लिपि-बोध	०– ६–०
२३. हिन्दुस्तानी प्रचार क्यों ?	१– ०–०
२४. हिन्दके विधानकी अंग्रेजी-हिन्दुस्तानी शब्दावली	२– ०–०
२५. रा ठी-हिन्दुस्तानी कोश	४– ८–०
२६. कैदकी आजादी	०–१४–०
२७. नाश्तेसे पहले	०–१२–०
२८. मंगल प्रभात (मासिक पत्रिका) सालाना चंदा	३– ०–०